चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	02
संपादकीय	03
पितृ ऋण	04
शहीद का सपना	06
पुण्य	09
कोरोना काल में सुरक्षित रहें, सुरक्षित रखें	10
चाची	12
"आदौ पूज्यो विनायकः"	13
वह मुस्कुराते क्यों हैं	14
जहाँ ई- तकनीक वहाँ हिंदी	16
अपील...	17
गया तीर्थ-पिण्डदान	19
श्राद्धपर्व एवं गया में पिण्डदान...	21
तर्पण	23
मोह सकलव्याधि करमूला	27
राम जन्मभूमि पूजन	29
हिंदी का थोडा.आनंद लीजिये/मुस्कुरायें	30
शाखा समाचार	31
समाज समाचार	31
शोक समाचार	32

अंक 09
सितंबर, वर्ष - 21

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक
डॉ. कुश चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', 3 रंगरेजन टोला,
छिपेटी, इटावा (उत्तरप्रदेश)
मोबा. 9411938577
ई- मेल :
kshchaturvedi8@gmail.com

व्यवस्थापक
शशांक चतुर्वेदी

वेबसाइट : www.chaturvedi-chandrika.com
www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चन्द्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा इटावा अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
सत्र + वार्षिक सदस्यता शुल्क- 101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक डॉ. कुश चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : sabhapati.mahasabha@gmail.com

बंधुवर सादर पालागन,

दिनाँक 5 अगस्त 2020 को दोपहर की शुभ मुहूर्त में हमारे भारतवर्ष के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अयोध्या में सनातन धर्म के युगपुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर एक भव्य मंदिर के निर्माण का शिलान्यास का भूमि पूजन किया। हिंदू धर्मावलंबियों के साथ संपूर्ण भारतवर्ष में हर्ष का वातावरण था। इस अवसर पर देश भर में सभी ने अपने घरों में दीपक जलाए व आतिशबाजी कर हर्ष व्यक्त किया। समाज में भी बहुत हर्ष व आनंद का वातावरण था जय सियाराम।

महासभा की जनहित की योजनाओं में अभूतपूर्व सामाजिक सहयोग से एक माह की अल्प अवधि में 6,75,000 रुपए जमा हो गए। समाज के युवाओं का इसमें योगदान सराहनीय व उत्साहवर्धक था। विपरीत परिस्थितियों में सहयोग के लिए आभार। इस समाजहित के कार्य में मुनींद्रजी व शशांक जी के निरंतर प्रयास सराहनीय है। मुझे इसकी प्रसन्नता है कि हमारे युवा समाज को लेकर चिंतित हैं।

समाज के अभूतपूर्व सहयोग को देखते हुए व आज की महंगाई की परिस्थितियों के चलते अन्य योजना अन्नपूर्णा योजना में दिया जाने वाला सहयोग कम प्रतीत होता है। अतः इस राशि को बढ़ाने का प्रस्ताव विचारणीय है। आप सभी से विचार विमर्श के उपरांत शीघ्र निर्णय लिया जाएगा। जनगणना कार्यक्रम अपनी गति से उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। हुगली, रिसड़ा, लखनऊ का कार्य पूर्णता पर है। रिसड़ा के भाई भरत जी, लखनऊ के दिलीप जी व ललित जी, शिव जी, कोटा को साधुवाद। साथ ही कोटा व आसपास के अंचलों की डायरेक्टरी भी इस कार्य में सहयोगी बनी है। इसके लिए कोटा सभा को बहुत-बहुत बधाई।

अरविंद चतुर्वेदी (इटावा/बाराबंकी) अधीक्षक, बाराबंकी को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया है। उन्हें बधाई। इसके साथ ही मैं कोरोना वायरस से देश को महामारी से बचाने पर अपने अपने स्तर पर कार्यशील समाज के सभी कोरोना वारियर्स को बधाई देता हूँ। जिन्होंने इन विपरीत परिस्थितियों में देश सेवा में अपना योगदान दिया। समाज के मेधावी बच्चों को उनकी उपलब्धियों पर बधाई।

विगत समय में हमारे पूर्व संपादक स्व. दिनेश चंद जी (मैनपुरी), स्व. सतीश जी (आगरा) व स्व.भरत चंद्र मिश्र जी (मैनपुरी) को मैं संपूर्ण समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। साथ ही में अपने वरिष्ठ सहयोगी स्व.पृथ्वी नाथ जी (चंद्रपुर/कानपुर) व स्व. राजेश नाथ जी (मैनपुरी/ इंदौर) को अपनी व समाज की ओर से श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

कोरोना महामारी के मद्देनजर उपस्थित परिस्थितियों के परिपेक्ष में शासकीय प्रतिबंधों व नियमों के अंतर्गत (बच्चों व बुजुर्गों की सामूहिक आयोजनों में उपस्थिति का प्रतिबंध, संख्या संबंधित पाबंधियों आदि) अपनी पूर्व की प्रतिष्ठा व अनुरूप आगामी अधिवेशन दिनांक 4 अक्टूबर 2020 को करने का डिजिटल माध्यम से किया जायेगा।

सादर

संपादकीय

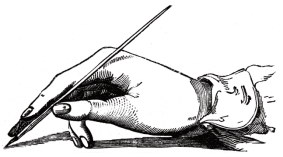

संपादकीय

कोविड संकट ने सामाजिक जीवन को झकझोर कर रख दिया है। सामाजिक दूरी के नारे ने सचमुच लोगों के मध्य दूरी भले ही न बढ़ा पाई हो लेकिन निकट आने के प्रति एक अज्ञात भय को जन्म अवश्य दिया है। परस्पर आने जाने की गति भी मन्द हुई है। सामने बैठकर बतरस का जो अतीव आनन्द हमारी परम्परा में है। इन दिनों उसमें भी कमी आयी है। जीवन से अधिक मूल्यवान शायद कुछ भी नहीं। जब संकट की आहट जिंदगी पर हो तो यह स्थिति अस्वाभाविक भी नहीं। हम घर में रहें सुरक्षित रहें। जरूरी सावधानियों के साथ घर से बाहर निकलें। यह आज के दौर का सबसे बड़ा यथार्थ है।

मेधावी बच्चों की सफलता को सचित्र छापने की हमारी योजना इस बार कुछ मन्द सी दीख रही है। सम्भव है कि पर्याप्त बच्चों तक हमारी आवाज न पहुंच पाई हो । यह भी सम्भव है कि कोरोना संकट में विभिन्न बोर्डों ने परीक्षाफल तो घोषित कर दिए लेकिन अंकपत्र नहीं भेजे जा सके।यूपीबोर्ड ने भी हाईस्कूल के अंकपत्र अभी तक नहीं भेजे। हमारा आग्रह था कि नेट पर उपलब्ध अंकपत्र को ही आधार मानकर भेज देते तो भी ठीक रहता। हमें जो भी प्राप्त हुए हम उन्हें प्रकाशित कर रहे हैं। यह बच्चे हमारा कल हैं इन्हें जी भर शुभाशीष दें। यही तो हमारी शक्ति हैं। हमारे कल के कर्णधार हैं। सबको बधाई ढेर सारा स्नेह। इनके माता पिता को कोटिशः बधाई।

यह माह पितृ पक्ष का भी है। हम सब परम् तेजस्वी और संस्कारवान पूर्वजों की संतानें हैं। अपने पूर्वजों को जलदान, तर्पण, श्राद्ध के माध्यम से हम न केवल उन्हें याद करते हैं अपितु अपने धर्मपालन का आत्मतोष भी हमें ऊर्जा देता है। वैसे जलदान तो दैनिक क्रिया है किन्तु आज की इस भागमभाग जिन्दगी में कम से कम पितृ पक्ष में तो हमें जलदान करना ही चाहिए।

हम सबसे भी भूल चूक होती रहती है। आप सबका विश्वास और स्नेह ही हमारी शक्ति है, हमारा मार्गदर्शन भी आप सब करते हैं। हम आशा करते हैं कि हमें संकेत करते हुए समय समय पर हमारा मार्गदर्शन रचनात्मक दृष्टि से अवश्य करेंगे। हमारे तीन पूर्व संपादक परम् श्रद्धेय भरत जी,दिनेश चंद्र जी और सतीश चंद्र जी कुछ समय पूर्व दिवंगत हुये। यह हमारी सामाजिक क्षति है।भरत जी की सेवाएं स्तुत्य हैं। दिनेश चंद्र जी ने मैनपुरी समाज की एक परिचायिका का भी कुशल संपादन किया था। सतीश चंद्र जी ने पत्रिका के कवि अंक का संपादन ही नहीं किया अपितु लम्बे समय तक पत्रिका से जुड़े रहे और नियमित लेखन करते रहे।तीनों ही विभूति प्रणम्य हैं। हमारा प्रयास होगा कि हम अपने पूर्व सभापतियों,पूर्व संपादकों के परिचय का एक विशेषांक प्रकाशित करें ताकि हमारी नई पीढ़ी को हम अपने गौरवशाली अतीत से परिचित करा सकें। इस दिशा में हमें आपका सहयोग और मार्गदर्शन चाहिए।

कोबिड़ काल की अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी पत्रिका को आप तक पहुंचाने में हमारे कर्मठ व्यवस्थापक भाई शशांक जी के प्रयास की जितनी सराहना की जाए कम है। हमारा प्रयास है कि हम आपकी अपेक्षाओं के अनुकूल कलेवर प्रस्तुत कर सकें। कृपया अपने सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराते रहें ताकि हमें सुधार के अवसर मिलते रहें। भाई डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (इटावा/लखनऊ) आईपीएस को इस बार फिर राष्ट्रीय पुलिस पदक मिला है। यह हमारे लिए गौरव का विषय है। अरविंद जी को कोटिशः बधाई।

मङ्गल कामनाओं सहित सादर पालागन।

(कुश चतुर्वेदी)

पितृ ऋण

- श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी, ग्वालियर

आज उस घटना को 5 वर्ष पूरे हो गए हैं। पर मधुर को लगता है, मानो कल की ही बात हो। उस दिन शनिवार था, और वह सुबह सुबह जोगिंग के लिए घर से निकला था। रास्ते में बेंच पर एक अधेड़ सज्जन को बैठे देखा। उन निगाहों में पता नहीं क्या था, कि मधुर के कदम ठिठक गए। औपचारिक अभिवादन करके आगे बढ़ गया। सोचा टहलने आए होंगे। थक कर सुस्ताने के लिए बैठ गए होंगे। लौटते समय फिर निगाह पड़ी, तो वे यथावत बैठे थे, असामान्य सा कुछ भी नहीं लगा। शनिवार और रविवार 2 दिन की छुट्टी मिलती है। बाकी दिन तो दौड़ भाग में ही बीत जाता है। मल्टीनेशनल कंपनी में काम करता है। नौकरी में ना जाने कितने किस्म के दबाव झेलने पड़ते हैं। बस इन दो दिन में ही जिम जाना, जोगिंग करना हो पाता है। सेहत का ध्यान रखना भी जरूरी है। शाम के समय निधि और बच्चों के साथ शॉपिंग के लिए उधर से निकला। ड्राइविंग करते समय निगाह अनायास उधर चली गई जानकर बड़ी हैरत हुई कि वह सज्जन सिर झुकाए अभी बेंच पर बैठे थे। मन में हलचल होने लगी। क्या सारे दिन भूखे प्यासे?

उन सज्जन की उम्र लगभग 65 के आसपास होगी। मधुर को पिता की स्मृति हो आई। जिन्हें उसने 12 वर्ष की उम्र में ही खो दिया था। अब तो बस उनकी धूमिल छवि ही रह गई है। निधि से विवाह के 2 वर्ष बाद माँ भी आंचल छुड़ा कर चलती बनी। मन की भावुकता को झटक उसने ड्राइविंग पर ध्यान लगाया। लगभग 10:00 बजे वापसी हुई। उत्सुकतावश देखा, हैरान रह गया। वे अभी भी वही जस के तस बैठे थे। मुरझाया चेहरा उनकी दयनीयता को प्रकट कर रहा था। अब अपने आपको नहीं रोक सका। तुरंत ब्रेक लगा दिए। निधि ने अचकचा कर पूछा, क्या हुआ। कुछ नहीं, अभी आया। मधुर गाड़ी से नीचे उतर गया। तेजी से उनकी और बढ़ा। यह क्या आप सुबह से यहां बैठे हैं। घर नहीं गए। अचानक उसे सामने देख, वे सज्जन हड़बड़ा कर खड़े हो गए। फिर घबराकर बोले, घर, कहां है घर? अब हैरान हो रहे की बारी मधुर की थी। क्या आपको पता नहीं आपका घर कहां है? नहीं बेटा, बिल्कुल ध्यान नहीं आ रहा है। अच्छा बात छोड़िए अपना नाम बतलाइए। नाम? वे और भी हैरान लगे। मेरा नाम क्या है, अब क्या करूं? मुझे तो यह भी ध्यान नहीं आ रहा। दिमाग पर बहुत जोर डालने पर भी उन्हें ना अपना नाम याद आ रहा था ना ही घर। किसके साथ आए थे, यह भी याद नहीं आ रहा था। अचानक वह बोले बेटा तुम क्यों परेशान हो रहे हो? रात हो गई है, घर जाओ। जब याद आ जाएगा मैं चला जाऊंगा।

उनका करुण स्वर सुनकर मधुर धर्मसंकट में फंस गया। इस तरह छोड़ कर जाते भी नहीं बन रहा था। पत्नी सहमत नहीं थी। एक अनजान व्यक्ति को रात में शरण देना उसकी निगाह में उचित नहीं था। सैकड़ों तर्क उसके पास थे। मान लो कोई गैंग हुआ। रात में साथी आ गए, तो अकेले हम लोग क्या कर लेंगे। पर निधि का कोई भी तर्क मधुर को अपने निर्णय से डिगा नहीं पाया। एक वृद्ध सज्जन को रात में ऐसे अकेला छोड़ देना, उसके संस्कारों को गवारा नहीं था। अनिच्छा से ही सही निधि को मान जाना पड़ा। थोड़ी आनाकानी के बाद वे भी साथ में आने को तैयार हो गए। सुबह से वे भूखे थे। निधि ने खाना परोस कर सामने रखा। भोजन की थाली देखते ही वे टूट पड़े। खाना खाते आंसू पोंछते जा रहे थे। शायद अपनी विवशता पर दुखी थे। आशीर्वादों की उन्होंने झड़ी लगा दी। सोने की व्यवस्था होते ही वे नींद के आगोश में चले गए। जब वे सो गए मधुर को अपार आनंद की प्राप्ति हुई।

दूसरे दिन रविवार था। चाय नाश्ते से निबट कर मधुर उन्हें लेकर पास के पुलिस स्टेशन गया। पूरा वाकया बतलाकर रिपोर्ट दर्ज करवा दी। अपना नाम, पता, फोन नंबर दे आया। जिससे कोई उनके विषय में पूछताछ करे, तो उसे खबर दी जा सके। दूसरा कार्य यह किया कि उनकी फोटो खिंचवा कर सभी स्थानीय अखबार के दफ्तरों में प्रकाशित करने के लिए दे आया। पूरा दिन वह और निधि उनके विषय में जानने की कोशिश करते रहे। पर किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे। अतीत बहुत याद था, पर वर्तमान विस्मृत वह भी असंबद्ध तरीके से। चेहरे पर हताशा का भाव देख मधुर उन्हें तसल्ली देता आप इसे अपना ही घर समझें और मुझे अपना बेटा। निधि ने भी मन से स्वीकार लिया था। मन की तमाम शंकाएं तिरोहित हो चुकी थी। दोनों बच्चे बहुत खुश थे। पहली दफा घर में किसी वृद्ध का आगमन हुआ था। बुजुर्गों के स्नेह से वंचित बच्चे उन्हें एक मिनट अकेला नहीं छोड़ते थे। स्कूल से लौटकर सबसे पहले दादाजी के कमरे की ओर दौड़ते। भय था कि कहीं दादा जी चले ना गए हो। यह संबोधन बच्चों ने स्वयं उन्हें दे दिया था। दादाजी से बातें करने के लिए बहुत से विषय थे। स्कूल की बातें, दोस्तों की बातें, खेलकूद की बातें। वह भी बहुत ध्यान से सुनते बच्चों का प्यार पाकर कभी-कभी भावुकता वश रोने लगते।

मधुर ने अपने एक डॉक्टर मित्र से फोन पर विस्तार से

बातचीत की। उन्होंने बतलाया कि बुढ़ापे में कुछ लोगों की स्मृति कम हो जाया करती है। कुछ लोगों की याददाश्त आंशिक रूप से कम होती है परंतु किसी किसी की स्थिति गंभीर हो जाती है। जैसा कि इनके साथ हुआ है। हाँ इलाज की आवश्यकता अवश्य है। परिणाम के बारे में कुछ भी निश्चितता से नहीं कहा जा सकता। दूसरे दिन से ही मधुर के जरूरी कामों में डॉक्टर का चक्कर लगाना भी शामिल हो गया।

साथ ही पुलिस स्टेशन भी जा कर देख लेता था, कि कोई उन्हें तलाश करता हुआ तो नहीं आया। बड़े ताज्जुब की बात थी कि पुलिस में रिपोर्ट, पेपर में समाचार देने के बावजूद किसी ने उनकी खोज खबर नहीं ली थी। कुछ शुभचिंतक उन्हें वृद्धाश्रम भेजने की बात करते थे, परंतु वह और उसका परिवार इस विकल्प के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। एक-एक कर दिन गुजरते गए वे परिवार में दूध पानी की तरह घुल मिल गए। अब तो वे अतीत के बारे में भी बात नहीं करते। वर्तमान ही सच है। मधुर और निधि पिताजी को पाकर खुश हैं, तो बच्चे दादाजी को पाकर। निधि कभी-कभी चुहल कर बैठती है, बच्चों को तो गोद लेते सुना था, पर यहां तो पिताजी। निधि के अधूरे वाक्य का आशय समझ मधुर खिलखिला उठता है। पित्र स्नेह से वंचित उसका हृदय प्रफुल्लता से भरा जाता है। उसके सभी परिचित मित्रगण इस फैसले की दिल खोलकर प्रशंसा करते हैं। आज के इस भौतिकतावादी युग में लोग सगो को भी बोझ समझते हैं। वही उसने किसी गैर को अपनाकर पितृ ऋण चुकाया है। पर कभी-कभी एक फ़ांस अवश्य चुभ जाती है कि कभी इनका वारिस आकर खड़ा हुआ। तब क्या करेंगे। क्या दोबारा पिता के स्नेह से वंचित हो जाएंगे?

निधि तसल्ली रहती है, अब कोई नहीं आने वाला। देखते-देखते 5 वर्ष बीत गए। जिस दिन में मिले थे, मधुर उसी दिन उनका जन्म दिवस धूमधाम से मनाता है। सभी रिश्तेदारों, मित्रों को एकत्रित कर हंगामा करना उसे बहुत अच्छा लगता है। बचपन से जिस रिश्ते के लिए तरस रहा था, उम्र के इस मोड़ पर अचानक मिल जाएगा, कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। पहले लोग तरह-तरह की बात किया करते थे,शंकाएं व्यक्त किया करते। बाद में वही सब उसकी सहृदयता की प्रशंसा करने लगे। मधुर को दूसरों की बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। बस परिवार उसके साथ है, यही खुशी की बात है। कभी-कभी वह सोचता है कि जिस परिवार के भी वह सदस्य रहे होंगे, उन्होंने कभी खोजने की कोशिश क्यों नहीं की।

बड़ा ही अजीब लगता है क्या आज के इस भौतिकतावादी युग में लोग इतने बेरहम हो सकते हैं। परिवार का एक सदस्य 5 वर्षों से गायब है। ढूंढने की कोई कोशिश भी नहीं की गई। पर उसके संस्कार इस सत्य को मानने से इनकार करते हैं। खून के रिश्ते इतने कमजोर कैसे हो सकते हैं। पर वह बहुत खुश है। विधाता ने उसे पितृ ऋण चुकाने का एक मौका दिया है। जब तक वे हैं उनकी सेवा मन लगाकर करेगा। अब तो वही उसके धर्म पिता हैं। बेटा की आवाज से मधुर का चिंतन अधिक देर नहीं चल पाता। उत्साहित कदमों से वह पिता के कमरों की ओर बढ़ जाता है।

आभार

बंधुवर पालागन

जिंदगी की परिस्थितियों से संघर्षरत व अन्य परिस्थितियों के चलते हमारे कुछ बान्धवों या परिवारों को सहयोग की आवश्यकता को समझते हुए महासभा ने सहयोग का हाथ बढ़ाया। विगत 11 वर्षो से हम अन्नपूर्णा सहायता, महिला सहायता, छात्रवृत्ति आदि मदों में सहयोग देकर सेवारत है। हमारा लक्ष्य निरंतरता है।

आज आप सभी के सहयोग से हम लोगों ने इस पुण्य कार्य को लगभग मात्र एक महीने की अल्पअवधि में ही लगभग रुपये 7,00,000/- का एक और मुकाम की प्राप्ति की। इस कार्य मैं मेरे सहयोगी भाईसाहब मुनींद्र नाथ जी तथा श्री शशांक जी का विशेष सहयोग मिला। एक पुण्य कार्य के लिए इतनी शीघ्रता से अपने सजातीय बंधुओं के लिए समाज का खड़े होना सराहनीय व उत्साहवर्धक है।

आप सब के सहयोग से मेरा हौसला बढ़ा है वह आगे कुछ और अच्छा करने के लिए उत्साह वर्धन भी हुआ है।

हृदय के अन्तःकरण से एक बार पुनः आप सभी समाजसेवी बाँधवों का हृदय के अन्तःकरण से बहुत-बहुत आभार।

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

शहीद का सपना

- डॉ. बीना चतुर्वेदी, जयपुर

भजनलाल दसवीं पास कर लेने के बाद खाली नहीं बैठा। गरीब माता-पिता की हालत को वह भली भांति जानता था और समझता भी था। उसके आगे पढ़ने की बहुत इच्छा थी, मगर उसके लिए आगे की पढ़ाई करना मुश्किल था। भजनलाल से छोटे उसके चार भाई-बहन थे। इन सब का खर्चा उठा पाना उसके पिता के वश में नहीं था। यही सब सोचकर भजनलाल ने पढ़ाई छोड़ कर एक कपड़े की दुकान पर नौकरी कर ली। भजनलाल को नौकरी करते हुए 2 वर्ष हो गए थे। एक दिन भजनलाल के पिता उमरावमल जी ने अपनी पत्नी से कहा कि भजनलाल की उम्र अब शादी की हो गई है। आसपास के गांव से शादी के रिश्ते आने लगे हैं। अब हमें इसके बारे में सोचना होगा। शाम को जब भजनलाल दुकान से घर आया, परिवार के सभी लोग भोजन कर रहे थे, खूब हंसी मजाक चल रहा था। उसी बीच भजनलाल से उसकी बहन विमला कहने लगी भैया अब जल्दी आप के सर पर सेहरा बंधने वाला है। पापा जी, ताऊ जी से इसके बारे में सलाह ले रहे थे। मैंने अपने कानों से सुना है। मैं झूठ नहीं बोल रही। मम्मी से भी पापा जी बात कर रहे थे।

विमला की बात सुनकर माहौल में अचानक शांति छा गई। यह सुनकर भजनलाल अपने माता-पिता की ओर देखने लगा। भजनलाल की ओर देखकर उसके माता-पिता ने हाँ के स्वर में अपनी गर्दन हिला दी। भजनलाल बेचारा क्या बोलता। भोजन करके वह चुपचाप वहाँ से खिसक लिया। दो-चार दिन बाद ही पास के गांव से लड़की के पिता और चाचा अचानक भजनलाल को देखने आ गए। आपस में मिल बैठकर बातचीत हुई। दुकान से भजनलाल को बुलवा लिया। लड़की के पिता ने भजनलाल से भी बात की। वह लोग संतुष्ट हो गए। उस समय भजनलाल की उम्र बीस वर्ष की थी और लड़की की उम्र अठारह वर्ष की थी। दोनों परिवार के लोगों ने सलाह मशवरा करके शीघ्र शादी का मुहूर्त निकलवाया।

शुभ मुहूर्त में दोनों की शादी धूमधाम से संपन्न हुई। लड़की का नाम विनीता था। लाल रंग के सलमा सितारों वाली झिलमिलाती हुई साड़ी में गौर वर्ण की दुबली पतली विनीता का रूप लावण्य देखते ही बनता था। छोटा सा घूंघट निकाले तिरछी नजरों से जब वह भजनलाल की ओर देख कर मुस्कुराती तो वह प्रेमा तोर होकर टकटकी लगाकर उसे देखता ही रह जाता। लाल रंग की लाख की नगीनों वाली कलाई भरी चूड़ियों के बीच हरी हरी चूड़ियां खनकाती हुई विनीता घर आंगन में रात दिन चकरघिन्नी की तरह घूमती रहती थी।

भजनलाल विनीता से कहता कि तुझ पर लाल रंग और हरा रंग बहुत खिलता है। तू प्रतिदिन इन्हीं रंगों के कपड़े पहनाकर। इन रंगों के कपड़ों में झलकता हुआ तुम्हारा उजला रंग मेरे दिल को बहुत सुकून देता है। जब जब मैं तुझे इस रूप में देखता हूं तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मेरा सपना साकार हो गया। मैं तुम्हारी जैसी जीवन संगिनी की कल्पना किया करता था। विनीता शरारत भरी निगाहों से अपने पति की ओर देखती और लजाने लगती।

एक दिन भजनलाल ने विनीता से कहा उसकी बहुत बड़ी तमन्ना थी। वह अपने देश की सेवा करने के लिए सेना में भर्ती होना चाहता था। पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण ऐसा नहीं हो सकाम मैं ऐसा सोचता हूं कि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। अगर तुम्हारी सहमति मिल जाए तो मैं सेना में जाने के लिए कोशिश करूं। इस देश को मेरी सेवा की आवश्यकता है। मेरी मातृभूमि मुझे पुकार रही है। मैं अपने देश पर मर मिटने के लिए तड़पता हूँ। विनीता अपने पति की इस तरह की की बातें सुनकर परेशान होकर कहने लगी भगवान के वास्ते ऐसा मत बोलो मैं मानती हूं कि हमारे देश को तुम्हारे जैसे बहादुर जवानों की आवश्यकता है और मैं तुम्हारे जज्बे को सलाम करती हूँ। यकीन मानो कि सेना में भर्ती होने के तुम्हारे सपनों को पूरा करने में मैं कभी बाधा नहीं डालूंगी। इसके साथ ही मैं आपसे यह भी कहती हूं कि कौन पत्नी होगी जो अपने पति को..... बोलते हुए आगे के शब्द विनीता के गले में अटक कर रह गए। वह सिसक उठी।

विनीता ने अनुभव किया कि उसके पति का सेना में जाने का जुनून दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। वह समाचार पत्रों के हर पृष्ठ पर सेना भर्ती परीक्षा के विज्ञापनों को तलाशता रहता था। शारीरिक परीक्षा की तैयारी के लिए प्रतिदिन प्रातः काल उठकर दौड़ने जाता था। उसकी कोशिश की थी कि वह इतनी मेहनत

करें कि फिटनेस परीक्षा पास कर सके।

विनीता इस बात को अच्छी तरह से समझ चुकी थी कि उसके पति अपने देश से बहुत प्यार करते हैं। उसको यकीन होने लगा था कि एक न एक दिन वह परिवार का मोह त्याग कर निश्चित रूप से सेना में भर्ती हो जाएंगे। भविष्य में उसे ही परिवार की जिम्मेदारी उठानी होगी।

कुछ समय पश्चात विनीता ने एक सुंदर और स्वस्थ बेटे को जन्म दिया। घर में सब और खुशी की लहर दौड़ने लगी। बेटे के होने का जलसा बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा था। उसी बीच खबर आएगी भजनलाल का चयन सेना में हो गया और उसे ट्रेनिंग के लिए जल्दी ही जाना पड़ेगा। इस समाचार को सुनकर सभी लोग बहुत खुश हो रहे थे। मगर फिर भी कहीं कुछ ऐसा था जो विनीता को अंदर ही अंदर खाए जा रहा था। ट्रेनिंग पूरी होने पर भजनलाल की पहली पोस्टिंग मेरठ शहर में हुई। घर में सब कुछ यथावत चल रहा था। विनीता का दिन का समय तो घर गृहस्ती के कामों में और बच्चे के पालन पोषण करने में व्यतीत हो जाता। मगर पहाड़ सी काली रातें उसकी आंखें नम करती रहती। वह कर्तव्य और भावना की तराजू में स्वयं को झूलता हुआ महसूस करती। विनीता किसी भी परिस्थिति में कमजोर नहीं पड़ना चाहती थी।

भजनलाल ने अपने बेटे का नाम सूरज रखा। सूरज अब एक वर्ष का हो गया था। उसकी बाल क्रीड़ाएँ परिवार के सभी लोगों को मोहित करती रहती थी। विनीता अपने पति को लिखे जाने वाले सभी पत्रों में सूरज की बाल की लीलाओं की जानकारी विस्तृत रूप से दिया करती थी। भजनलाल इतनी दूर होते हुए भी हर क्षण अपने बेटे की तोतली भाषा में बोले गए टूटे-फूटे मीठे बोलों को महसूस करता था। उसके अपने बेटे सूरज को देखने की बहुत लालसा हो रही थी। उसने अपने पिताजी को पत्र लिखकर अपनी इच्छा प्रकट की कि वह चाहता है कि विनीता और सूरज कुछ समय के लिए उसके पास रहने आ जाए। वह बेटे सूरज की अठखेलियां अपनी आंखों से देखना चाहता है। उसको छुट्टी नहीं मिल रही। वरना दो-चार दिन के लिए आ जाता। अपने परिवार को मेरठ में अपने साथ रखने की अनुमति उसे मिल गई है। अतः आप किसी के साथ इन दोनों को भेजने का प्रबंध कर दीजिए। विनीता और सूरज लगभग एक वर्ष तक भजन लाल के साथ मेरठ में रहे। एक वर्ष का समय इन लोगों के लिए बेहद अहम था। दोनों अपने बेटे के साथ बहुत खुश थे। इसी बीच सूरज अपने पैरों पर खड़ा होने लगा। बेटे का डगमगाते पैरों से ठुमक ठुमक कर चलना, उठना-गिरना, रोना- हंसना इन सभी क्रियाओं को यह दोनों अपनी आंखों में बसा लेना चाहते थे।

थोड़े समय पश्चात विनीता ने एक प्यारी सी बेटी गुनगुन को जन्म दिया। भजनलाल और विनीता अपनी छोटी सी दुनिया में खुश रहते थे तथा भविष्य के सपने संजोते रहते थे। पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वह जिस मंजिल तक स्वयं नहीं पहुंच सका था। उस मंजिल तक अपने बच्चों को पहुंचाने की कल्पना किया करता था। सूरज अब आठ वर्ष और गुनगुन छः वर्ष की हो गई थी। अचानक पाकिस्तानी सैनिकों ने हिंदुस्तान की सीमा में घुसपैठ शुरू कर दी। युद्ध के हालात बनने लगे। विनीता के सुकून भरे दिनों पर वज्रपात हो गया। भजनलाल की ड्यूटी सीमा पर लगा दी गई। उसे शीघ्र अति शीघ्र वहां पहुंचने का आदेश मिल गया। अब वह अपने परिवार को वहां नहीं ले जा सकता था। विनीता के मन में आशंकाओं के बादल मंडराने लगे। हालांकि वह इस बात से भलीभांति परिचित थी कि सेना की नौकरी में इस तरह की स्थितियां आती रहती हैं फिर भी किसी अनहोनी को सोच कर उसका कलेजा मुंह को आ जाता।भजनलाल की स्थिति एकदम विपरीत थी वह बहुत उत्साहित होकर कह रहा था, विनीता अपनी मातृभूमि की सेवा करने का अवसर हर किसी को नहीं मिलता। मैं बहुत खुशनसीब हूं। मेरी भारत माँ को आज मेरी जरूरत है। मेरी पत्नी होने के नाते तुम्हारा फर्ज बनता है कि तुम मेरा आत्मबल बढ़ाओ और मेरी अनुपस्थिति में मेरे परिवार की जिम्मेदारी उठाओ। विनीता अंदर ही अंदर घुटन महसूस कर रही थी। मगर ऊपर से मुस्कुराने की कोशिश कर रही थी। वह भजनलाल के जुनून के समक्ष कमजोर नहीं पड़ना चाहती थी। उसके दिलो-दिमाग को आशंकाओं ने घेर रखा था। ऐसे कष्टप्रद क्षणों में भी विनीता अपने पति से एक वादा ले रही थी कि वह हर हालत में सप्ताह में एक पत्रों से अवश्य लिखें तथा मौका मिलने पर फोन करके उससे बात करने की कोशिश करें। इसी के साथ विनीता ने भजनलाल के माथे पर तिलक लगाकर उसे प्रस्थान किया। विनीता अपने बच्चों के साथ साथ ससुर के पास गाँव वापस आ गए। भजनलाल सोत्साह

अपने कर्तव्य मार्ग पर चला गया। भजनलाल को तरक्की देकर भेजा गया था। एक और विनीता और उसके परिवार के लोग भजनलाल की तरक्की से खुश हो रहे थे। मगर दूसरी और सबका दिल बैठा जा रहा था। भजनलाल की याद में विनीता उसके साथ बिताए हुए दिनों की स्मृतियां संजोती और उन्हें पत्रों में लिखकर उस तक पहुंचा कर उसका हौसला बढ़ाती। दूर रहते हुए भी नज़दीकियां बनाए रखने का एकमात्र यही जरिया उन लोगों के पास रह गया था। हर सप्ताह विनीता अभिलंब भजनलाल के पत्रों का जवाब देती। भजन लाल के पत्रों के माध्यम से उसे जानकारी मिलती रहती है कि सरहद पर दिन रात गोलीबारी होती रहती है। सरहद के नजदीक रहने वालों को अपना घर द्वार और पशुओं को असहाय हालत में छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ता है। जो लोग किसी कारणवश वहां से छोड़कर नहीं जाना चाहते। उनकी जान को हमेशा खतरा बना रहता है,और इन लोगों को सरकारी बंकरो में पनाह लेनी पड़ती है। भजनलाल अपने और साथियों के साहसिक कारनामों के बारे में अपने पत्रों में बताता रहता था। जिन्हें पढ़कर विनीता का दिल का काँपने लगता था। विनीता पत्र पढ़कर अपने पति के साथ के बारे में परिवार के लोगों को बड़े गर्व के साथ सुनाती थी। भजनलाल ने पत्र में लिखा था कि भयंकर युद्ध होने की स्थिति पैदा होने लगी है। बहुत संभव है कि मैं हर सप्ताह पत्र मैं न लिख सकूं। यह समाचार पढ़कर विनीता बेचैन होने लगी। टीवी में भी इसी तरीके के समाचार लगातार सुनाए जा रहे थे।

बहुत इंतजार के बाद एक दिन अचानक भजनलाल का पत्र आया। लिखा था कि विनीता हो सकता है यह मेरा अंतिम पत्र हो। कश्मीर के कुछ हिस्सों में पाकिस्तानी सेना आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है। हमारी सेना की ओर से भेजी जाने वाली टुकड़ी में मुझे भी भेजा जा रहा है। भगवान ना करे यदि मुझे कुछ हो जाए, तो तुम हमारे बच्चों को अच्छा इंसान बनाना। बड़ा होने पर इन्हें सेना में भेजने की कोशिश करना। इसी को मेरी अंतिम इच्छा समझना। मेरे चले जाने पर दुखी मत होना। बल्कि सिर उठाकर गर्व के साथ कहना कि मैं शहीद की पत्नी हूं।

कुछ समय पश्चात युद्ध विराम होने पर भजनलाल के सामान के साथ तिरंगा में लिपटा हुआ उसका शव आया। यह देख भजनलाल के माता–पिता की हालत बहुत नाजुक हो गई। बच्चों की समझ में ठीक से कुछ नहीं आ रहा था। पूरे गांव में कोहराम मच गया था। विनीता चुपचाप खड़ी देख रही थी। उसने अपने बच्चों को सीने से लगा रखा था। भजनलाल के अंतिम पत्र में उसने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की थी। उसी को याद करके विनीता दृढ़ प्रतिज्ञ थी। कहते हैं कि समय बहुत बलवान होता है भजनलाल के बेटा बेटी सूरज और गुनगुन युवा हो गए थे। विनीता ने अपने बच्चों की परवरिश जी जान लगाकर की थी। दोनों को उसने उनकी इच्छा अनुसार शिक्षा दिलवाई। सूरज इंजीनियर बनने के बाद सेना में नौकरी करने लगा और अपने पिता के बताए रास्ते पर चल पड़ा। गुनगुन नर्स बन गई और उसने भी सेना में नौकरी कर ली। उसने अपना संपूर्ण जीवन भारत माता के लालों की सेवा करने में अर्पित कर दिया।

सरकार ने भजनलाल के गांव की ओर जाने वाली मुख्य सड़क का नाम भजनलाल का रास्ता रखवा दिया। विनीता को काफी मशक्कत के बाद पेट्रोल पंप मिल गया। भजनलाल के शहीद होने के बाद विनीता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मगर वह कभी कमजोर नहीं पड़ी। उसने बहुत ही हिम्मत के साथ सभी कठिनाइयों का सामना किया। विनीता को इस बात का आज अभिमान है कि उसने अपने पति के सपने को साकार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पति के जीवित अवस्था में भी और उनके शहीद होने के बाद भी उनकी अंतिम इच्छा को पूरी लगन के साथ पूरा किया। उसे अपने आप पर गर्व है कि वह एक शहीद की विधवा है, और बहादुर बच्चों की माँ।

बहुत इंतजार के बाद एक दिन अचानक भजनलाल का पत्र आया। लिखा था कि विनीता हो सकता है यह मेरा अंतिम पत्र हो। कश्मीर के कुछ हिस्सों में पाकिस्तानी सेना आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है। हमारी सेना की ओर से भेजी जाने वाली टुकड़ी में मुझे भी भेजा जा रहा है। भगवान ना करे यदि मुझे कुछ हो जाए, तो तुम हमारे बच्चों को अच्छा इंसान बनाना। बड़ा होने पर इन्हें सेना में भेजने की कोशिश करना। इसी को मेरी अंतिम इच्छा समझना। मेरे चले जाने पर दुखी मत होना। बल्कि सिर उठाकर गर्व के साथ कहना कि मैं शहीद की पत्नी हूं। कुछ समय पश्चात युद्ध विराम होने पर भजनलाल के सामान के साथ तिरंगा में लिपटा हुआ उसका शव आया। यह देख भजनलाल के माता-पिता की हालत बहुत नाजुक हो गई। बच्चों की समझ में ठीक से कुछ नहीं आ रहा था। पूरे गांव में कोहराम मच गया था। विनीता चुपचाप खड़ी देख रही थी। उसने अपने बच्चों को सीने से लगा रखा था। भजनलाल के अंतिम पत्र में उसने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की थी। उसी को याद करके विनीता दृढ़ प्रतिज्ञ थी।

पुण्य

- सुचित्रा दिलीप, लखनऊ

ऑफिस में काम करने वाली इला ने बताया कि मैं ऑफिस बस से ही आती जाती हूँ। ये मेरी दिनचर्या का हिस्सा हैं। उस दिन भी बस काफ़ी देर से आई, लगभग आधे-पौन घंटे बाद। खड़े-खड़े पैर दुखने लगे थे। पर चलो शुक्र था कि बस मिल गई। देर से आने के कारण भी और पहले से ही बस काफी भरी हुई थी। बस में चढ़ कर मैंनें चारों तरफ नज़र दौडाई तो पाया कि सभी सीटें भर चुकी थी। उम्मीद की कोई किरण नज़र नही आई। तभी एक मजदूरन ने मुझे आवाज़ लगाकर अपनी सीट देते हुए कहा, मैडम आप यहां बैठ जाये। मैंनें उसे धन्यवाद देते हुए उस सीट पर बैठकर राहत की सांस ली। वो महिला मेरे साथ बस स्टांप पर खड़ी थी तब मैंने उस पर ध्यान नही दिया था। कुछ देर बाद मेरे पास वाली सीट खाली हुई, तो मैंने उसे बैठने का इशारा किया। तब उसने एक महिला को उस सीट पर बिठा दिया जिसकी गोद में एक छोटा बच्चा था। वो मजदूरन भीड़ की धक्का-मुक्की सहते हुए एक पोल को पकड़कर खड़ी थी। थोड़ी देर बाद बच्चे वाली औरत अपने गन्तव्य पर उतर गई। इस बार वही सीट एक बुजुर्ग को दे दी, जो लम्बे समय से बस में खड़े थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि हम दिन-रात बस की सीट के लिये लड़ते है और ये सीट मिलती है और दूसरे को दे देती हैं। कुछ देर बाद वो बुजुर्ग भी अपने स्टांप पर उतर गए, तब वो सीट पर बैठी। मुझसे रहा नही गया, तो उससे पूछ बैठी l तुम्हें तो सीट मिल गई थी एक या दो बार नही, बल्कि तीन बार, फिर भी तुमने सीट क्यों छोड़ी ? तुम दिन भर ईट-गारा ढोती हो, आराम की जरूरत तो तुम्हें भी होगी, फिर क्यो नही बैठी ? मेरी इस बात का जवाब उसने जो दिया उसकी उम्मीद मैंने कभी नही की थी। उसने कहा, ₹मैं भी थकती हूँ। आप से पहले से स्टांप पर खड़ी थी, मेरे भी पैरों में दर्द होने लगा था। जब मैं बस में चढ़ी थी तब यही सीट खाली थी। मैंने देखा आपके पैरों में तकलीफ होने के कारण आप धीरे-धीरे बस में चढ़ी। ऐसे में आप कैसे खड़ी रहती इसलिये मैंने आपको सीट दी। उस बच्चे वाली महिला को सीट इसलिये दी उसकी गोद में छोटा बच्चा था जो बहुत देर से रो रहा था। उसने सीट पर बैठते ही सुकून महसूस किया। बुजुर्ग के खड़े रहते मैं कैसे बैठती, सो उन्हें दे दी। कुछ देर का सफर है मैडम जी, सीट के लिये क्या लड़ना। वैसे भी सीट को बस में ही छोड़ कर जाना हैं, घर तो नहीं ले जाना ना। मैं ठहरी ईट-गारा ढोने वाली, मेरे पास क्या हैं, न दान करने लायक धन हैं, न कोई पुण्य कमाने लायक करने को कुछ। रास्ते से कचरा हटा देती हूं, रास्ते के पत्थर बटोर देती हूं, कभी कोई पौधा लगा देती हूं। यहां बस में अपनी सीट दे देती हूं। यही है मेंरे पास, यही करना मुझे आता है।

वो तो मुस्करा कर चली गई पर मुझे आत्ममंथन करने को मजबूर कर गई। मैंने मन ही मन उस महिला को नमन किया तथा उससे सीख ली यदि हमें समाज के लिए कुछ करना हो, तो वो दिखावे के लिए न किया जाए बल्कि खुद की संतुष्टि के लिए किया जाय।। इला के साथ घटित घटना मुझे भी प्रेरणादायक लगी, सोचा सबके साथ शेयर कर लूं।।

अधिवेशन सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के दिनांक 4 अक्टूबर 2020 को आहूत अधिवेशन जिसकी सूचना अगस्त 2020 अंक में चतुर्वेदी चन्द्रिका मे प्रकाशित की गई है, के तारतम्य मे कोरोना महामारी में अपेक्षित सुधार न होने, समारोहो में सम्मलित होने वाले व्यक्तियों की निर्धारित सीमा के शासकीय आदेश के अनुपालन व सभी के स्वास्थ की सर्वोच्च प्राथमिकता को दृस्टिगत रखते हुए। इन असामान्य परिस्थित में निर्णय किया है कि उक्त एक दिवसीय अधिवेशन व महासम्मेलन पूर्व घोषित तिथि दिनांक 4/10/2020 को ही प्रातः 10.30 बजे से डिजिटल प्रारूप में सम्पादित किया जावेगाl Digital link की सूचना वेब्सायट chaturvedimahasabha.in के माध्यम से सूचित किया जाएगा ।

कार्यक्रम का विस्तृत विवरण निम्न है :

4 अक्टूबर – 10.30 से 12.30 बजे तक
अधिवेशन प्रथम सत्रः
केवल महासभा सदस्यों के लिए
अधिवेशन द्वितीय सत्रः
दोपहर 2 बजे से 4 बजे महाधिवेशन
सभी बांधवों के लिए खुला मंच
प्रथम बैठक
सांय 4 से 5 बजे नवगठित कार्यकारिणी प्रथम बैठक

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी
सचिव

कोरोना काल में सुरक्षित रहें, सुरक्षित रखें

- चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

हर साल की भांति पुराना साल जा रहा था और साल 2020 आगमन को आतुर बाहें पसारे खड़ा था। कहीं कोई रुकावट या बाधा नहीं थी जीवन की गाड़ी सामान्य गति से दौड़ रही थी। सन 2020 का आगमन हुआ, न्यू ईयर के कार्यक्रम जोर शोर से बनाए गए हैप्पी न्यू ईयर की गूंज भी सुनाई दी। तीज त्यौहार अपने रंगों में थे और आ पहुंचा रंगों का त्यौहार होली। होली जली धुलेड़ी खेली गई और रंग पंचमी पर होली मिलन कार्यक्रम सभी जगहों पर संपन्न हुए। होली पर ही एक सुगबुगाहट सुनाई पड़ी कि कोई वायरस वाली बीमारी भारत में आई है जो गंभीर रूप में है और नाम है 'कोरोना वायरस'।

बताया गया कि यह बीमारी चीन से आई है इसकी जानकारी दिसंबर में मिली थी।बीमारी का शुरुआती दौर बहुत ही हल्के रूप में हुआ था। फिर मार्च में इस बीमारी ने भयंकर रूप से अपने पांव पसारने शुरू कर दिए थे। अब हम सब जानते हैं कि कोरोना वायरस का संबंध वायरस के एक ऐसे परिवार से है जिस के संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ होने की समस्या तक हो सकती है। इस वायरस का संक्रमण चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ और धीरे धीरे विश्व के 70 से ज़्यादा देशों में फैल गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक- बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण है । हालांकि अब तक ये बिल्कुल स्पष्ट नहीं हो पाया है कि ये वायरस असल में फैल कैसे रहा है। कभी कहा गया सतह से फैलता है,कभी कहा गया ड्रोप्लेट से फैलता है तो कभी हवा। अब तक इस वायरस को रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है, हालांकि कई देशों में प्रयास जारी हैं। मोटे तौर पर इस बीमारी के लक्षण फ्लू से मिलते जुलते हैं। पर यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे में फैलता है इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है।

जिस तरह से देश विदेश में कुछ मरीज़ गंभीर रूप से संक्रमित हुए और मौतें हुई कुछ मामलों में कोरोना प्राण घातक भी हो सकता है ये समझ आया। साफ तौर पर अधिक उम्र वाले लोग जिन्हें अस्थमा, शुगर या बीपी की बीमारी है या जो दिल के मरीज हैं या फिर जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम है। उन्हें खास ध्यान रखने की ज़रूरत है। इस बीमारी को कोविड-19 भी कहा जाता है। 'को', यनि कोरोना ,'वि' यानी वायरस, 'डी' यानी डिजीज, और '19' यानि साल 2019 जिसमें इसका पहला केस मिला। जिन देशों ने इसे शुरुआती दौर में गंभीरता से नहीं लिया उन देशों की हालत बहुत खराब हुई और उन्हें जान माल का भी बहुत नुकसान उठाना पड़ा। कोरोना वायरस यानी कोविड-19 दुनिया में चर्चा का मुद्दा बना हुआ है। दिसंबर के आखिर में जब चीन में इसका पहला मामला सामने आया तो इसे कोरोना वायरस फैमिली के विस्तार के रूप में जाना गया। क्योंकि यह बीमारी चीन से फैलनी शुरू हुई, इसलिए कुछ लोगों ने इसे चीनी वायरस का नाम भी दिया। कहा तो यह भी गया कि चीन ने भौगोलिक और व्यवसायिक प्रसार के लिए इस वायरस को कृत्रिम रूप से तैयार किया।

हालांकि ये दावा भी सिद्ध नहीं हुआ है। पर निश्चय ही समय रहते दुनिया को इस बीमारी वायरस के बारे में न बताकर चीन से एक बड़ी चूक तो हुई ही है। विशेषज्ञों का कहना है कि सर्दी, खांसी और बुखार को आज संभावित महत्वपूर्ण लक्षण के रूप में माना जा सकता है, किंतु गंध न आना, किसी भी भोज्य वस्तु का स्वाद न आना भी बेहद महत्वपूर्ण लक्षण हैं। अमरीकी सीडीसी के मुताबिक ठंड लगना, कपकपी महसूस होना, मांसपेशियों में दर्द और गले में खराश भी कोरोनावायरस के चपेट में आने का संकेत हो सकता है। ऐसा माना जाता है कि कोरोनावायरस के लक्षण दिखने में औसतन 5 दिन का समय लगता है लेकिन कुछ लोगों में यह समय कम भी लग सकता है। इस समय कोरोनावायरस का कोई सटीक है निश्चित इलाज नहीं है ऐसा सुनते हैं कि इसमें बीमारी के लक्षण कम करने वाली दवाइयां दी जाती है। जब तक मरीज ठीक ना हो जाए उसे दूसरों से दूर रहना चाहिए कोरोनावायरस के इलाज के लिए वैक्सीन विकसित करने पर काम चल रहा है। कुछ एंटीवायरस दवाओं का परीक्षण भी चल रहा है। इस बीमारी का की संक्रमण क्षमता बहुत तेज है। भारत वर्ष में भी लाखों लोग इस बीमारी की चपेट में आ चुके हैं और दिन पर दिन यह आंकड़ा तेजी से बढ़ता जा रहा है। एक तरह से कोरोना अभी तक की दुनिया में सबसे बड़ी त्रासदी है। जब तक एक सटीक और सही उपचार नहीं मिल जाता तब तक बचाव ही उपचार है।

समय-समय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन और देश का स्वास्थ्य मंत्रालय बचाव के दिशा निर्देश जारी कर रहा है। जिन्हें मानने के अलावा फिलहाल कोई और रास्ता नहीं है। इन निर्देशों के मुताबिक हाथों को साबुन से समय समय पर धोना आवश्यक है। खासतौर पर जब बाहर से घर आएं। किसी ऐसी वास्तु को छुएं जो आप बाहर से लेकर आये हैं या फिर हैंडल या कोई ऐसी चीज़ छूने के बाद, जिसे कई लोगों ने छुआ हो, खाना पकाने के पहले और खाना खाने के पहले और बाद में। अक्सर लोग पानी से हाथ धोकर संतुष्ट हो जाते हैं, ऐसे लोगों के लिए सख्त हिदायत जारी की गयी है कि हाथ

कम से कम 20 सेकंड तक साबुन से धोया जाना ज़रूरी है। अल्कोहल आधारित हैंड सैनिटाइजर का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खासकर तब जब आप घर से बाहर हैं और पब्लिक स्पेसेस में काम कर रहे हैं। अगर आपको ज़ुकाम और खांसी है तो उसे हलके में न लें, डॉक्टरी सलाह ज़रूर ले लें। खांसते और छींकते वक़्त मुँह को कपड़े या पेपर नैपकिन से ढंकें और फिर उस इस्तेमाल किये नैपकिनों को पॉलिथीन में बाँधकर फेंकें। कपड़ा है तो साबुन में धोएं और ३-४ घंटे सुखाएं। इन निर्देशों के साथ ही दो चीज़ें हमारी ज़न्दिगी में अचानक ही शामिल हो गयीं – मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग। पहले पहल यह कहा गया कि जिसे सर्दी जुकाम हो वह घर से बाहर ना निकले और अगर निकले तो चेहरे पर मास्क ज़रूर हो। फिर जिस तेज़ी से संक्रमण फैल रहा था। निर्देशों में बदलाव किया गया और कहा गया कि घर से बाहर निकलते वक़्त चेहरे पर मास्क लगाना ही पहली शर्त होगी। कई राज्य सरकारों ने मास्क न लगाने और दूसरों के लिए खतरा पैदा करने को जुर्म की श्रेणी में रखते हुए उस पर सजा भी घोषित की है।

दूसरा शब्द सोशल डिस्टेंसिंग अब हम सबकी जुबां पर है। प्रधानमंत्री जी के शब्दों में आपस में दो गज की दूरी से इस वायरस के संक्रमण से काफी हद तक बचा जा सकता है। यही कारण है कि चाहे हस्पताल हो,ऑफिस हो,बाजार या सब्ज़ी मंडी। सब जगह सोशल डिस्टेंसिंग अति आवश्यक है। कहा गया कि अगर आप ठीक महसूस नहीं कर रहे,थकान ,हरारत या कोई और समस्या लगे तो घर पर ही रहे,बाहर न निकलें। इतना ही नहीं, जब तक स्वस्थ्य को लेकर संशय की स्थिति हो, घर पर भी घुलें मिलें नहीं, खुद को एक कमरे में सीमित कर के डॉक्टर के बताये निर्देशों का पालन करें ताकि अगर कहीं कोई संक्रमण हो भी तो वो दूसरों तक न पहुंचे। इसके अलावा जिन घरों में दस साल से छोटे बच्चे या फिर साठ साल से ऊपर के बुज़ुर्ग हों उन्हें ख़ास सावधानी रखने के निर्देश जारी किये गए।

निर्देशों का पालन शुरूआती दौर में गंभीरता से नहीं हुआ,क्यूंकि हर शख्स को लगा कि ये वायरस सिर्फ उनको पकड़ रहा जो या तो विदेश से आएं या जो विदेश से आने वालों के करीब हैं। नतीजन पूरे देश में मरीज़ों की संख्या बढ़ी और नियंत्रण के इंतज़ाम करने और कड़े कदम उठाने के लिए आखिर सरकार को 23 मार्च से 21 दिन का लॉकडाउन करना पड़ा जिसके बाद तीन 15-15 दिन के चरण और हुए। मरीज़ों की संख्या लॉक डाउन के बाद भी बढ़ी ही क्यूंकि निर्देशों का पालन कहीं ठीक से नहीं हुआ तो कहीं संक्रमण इस कदर फैला कि संख्या बढ़ती गयी। संख्या बढ़ने का एक कारण संक्रमण है ये सुनिश्चित करने वाले टेस्ट की संख्या का बढ़ना भी था। गनीमत ये है कि हमारे देश में रिकवरी रेट लगातार 60 प्रतिशत से ऊपर बना रहा। ये लॉक डाउन अपने आप में ऐतिहासिक रहे। एक उत्सव धर्मी और आध्यात्मिक समाज में उत्सव एक तरह से रुक गए हैं। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे,चर्च सब के दरवाज़े बंद हो गए। एक सामाजिक माहौल धीरे धीरे अपने दायरों को समेटने लगा। सरकारी निर्देशों के अनुसार, मृत्यु संस्कार के लिए 20 लोग और विवाह संस्कार के लिए दोनों पक्ष मिलाकर 50 और जन्मदिन के लिए 10 की सीमा निर्धारित कर दी गयी। अनलॉक की प्रक्रिया के बीच भी ज़्यादातर जगहों पर सार्वजनिक परिवहन बंद हैं। सीमित संख्या में ट्रैन व विमान सेवाएं जारी हैं। अंतर्राष्ट्रीय विमान सेवा लम्बे समय तक बंद रहने के बाद अब चरणबद्ध तरीके से खोली जा रही है।

हर तरफ फैले अवसाद और माथे पर चिंता की रेखाओं के बीच भी ये लॉक डाउन कई मायनों में कमाल कर गए। सोशल मीडिया को देखिये तो मार्च से अब तक में आप प्रकृति की जयंती खूबसूरत तस्वीरें देख पाएंगे, ऐसा यकीन ही नहीं होता कि ये हमारे अपने शहरों की फोटो हैं। इतना नीला आसमान, पेड़ पर हरी पत्तियाँ, तरह तरह के पशु पक्षी जो न जाने कितने सालों से दिखे ही नहीं थे, नदियों में साफ़ पानी और जगह जगह से स्पष्ट दिखने वाला हिमालय। कारण सिर्फ इतना कि प्रकृति को आराम मिला। सड़क पर वाहन कम हुए, फैक्ट्रियां बंद हुई, धुंआ कम हुआ, लोग बाहर काम निकले, नदियों में कूड़ा कम गया, ओज़ोन की परत खुद व खुद अपनी तुरपाई में लग गयी। इसके अलावा आप अगर तीन चार परिवारों में बात करके देखें तो आपको ऐसे कई लोग मिल जाएंगे जिन्होंने इस दौरान खाना बनाने, पेंटिंग, नृत्य, संगीत, ध्यान जैसे अपने शौक तो पूरे किये ही, अपने आप को भी भरपूर समय दिया। लोगों ने अपने स्कूल कॉलेज के साथियों, रिश्तेदारों से फोन पर ही सही, पर हाल चाल लिए, लोग इस मुश्किल समय में भी अपने घरों में रहकर भी एक दूसरे के न सिर्फ करीब आये, बल्कि अपनी ज़दिगियों में उनके महत्व को भी समझा। दौड़ धुप भरी ज़न्दिगी में बहुत से अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ समय बिताने का अवसर कई साल बाद मिला। विदेशों में रह रहे बच्चे कई साल बाद अपने देश में इतना लम्बा समय बिताते नज़र आये। अपनी लोक परंपरा को जानने समझने में भी तकनीक की मदद से लोगों ने समय बिताया।

अब अनलॉक के इस दौर में भी रोज़ाना जब 44 हज़ार से ज़्यादा मरीज़ देश भर में निकल रहे हैं। तब अपनी अपनी ज़दिगी को पटरी पर लाने का काम हम सब कर रहे हैं। कम संख्या के साथ ऑफिस शुरू हो चुके हैं, परिवहन भी अब चालू हो रहे हैं। याद रखने की बात सिर्फ इतनी है कि खतरा गया नहीं है। दवा और वैक्सीन की कोशिश भारत समेत कई देशों में चल तो रही है पर पूरी सफलता मिली नहीं है। सफलता मिल भी जाए तो वैक्सीन को बाजार में आने में कुछ महीने लगेंगे ही। ऐसे में दो गज की दूरी, मास्क,ध्यान खुद पर और अपने अपनों पर, कदम घर के भीतर और एक समाज के तौर पर ज़म्मिदारी निभाते रहना ही मूल मंत्र है। सुरक्षित रहे, सुरक्षित रखें।

चाची

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

आज पूरा मोहल्ला उदास था। चाची की अर्थी सजाई जा रही थी। पूरे मोहल्ले के आंखों में आंसू थे। जैसे ही अर्थी उठी। राम नाम सत्य की आवाज लगी। लोग रोने लगे। वैसे ही रोने लगे जैसे उनका कोई सगा संबंधी जा रहा हो। मेरी आंखों के सामने चाची की सूरत व आवाज गूंजने लगी। चल चित्र की तरह सभी घटनाएं आंखों के सामने आने लगी। पूरे मोहल्ले की वह चाची थी। छोटे से लेकर बुजुर्ग तक उन्हें चाची का ही संबोधन देते थे। अपने मोहल्ले की सभी मर्ज की दवा थी। कोई समस्या हो चाची से कह दो समाधान करेंगी या करवाएंगी। चाची दबंग थी। गलत बात के लिए सब से लड़ने को तैयार और भगवान ने आवाज भी कुछ बुलंद दी थी। अपने घर के दरवाजे से एक आवाज लगाई, क्यों क्या हो रहा है। बस इतना ही काफी था। गलत काम करने वाले के लिए। मोहल्ला तो उसका अपना था लेकिन यदि आस - पड़ोस के किसी मोहल्ले में कोई जानकारी मिलती तो झट पहुंच जाती समस्या का समाधान करने या सबक सिखाने। कहने का तात्पर्य यदि उनके कान में यह आवाज पहुंच गई अन्याय हुआ है या हो रहा है उनका घर में बैठना नामुमकिन था। चाची की आय का साधन पति की पेंशन थी। उससे दाल-रोटी आसानी से चल जाती थी। अपने समय की वह पोस्ट थी। ग्रेजुएट पढ़ाई करने के लिए भी उन्होंने बहुत संघर्ष किया, परिश्रम किया तथा घरवालों की नाराजी भी सही। खाली समय में मोहल्ले की बच्चियों को अंग्रेजी की ग्रामर पढ़ाया करती थी।

समय और परिस्थितियों ने उन्हें ऐसा बना दिया था। बुजुर्ग कहते हैं कि चाची शुरू से ऐसी नहीं थी। घुंघट डालकर घर में रहने वाली महिला थी। पति के गंभीर बीमार हो जाने के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। स्थिति बिगड़ती गई। लेकिन चाची आईसीयू वार्ड के बाहर 3 दिन 3 रात लगातार बैठी रही। ना कुछ खाया और ना पानी पिया। डॉक्टरों की मीठी फटकार भी उन्हें वहां से हटा ना सकी। लेकिन पति ना बचे। पति का दाह संस्कार, क्रिया क्रम चाची ने किया। मोहल्ले के बुजुर्ग कहते थे, इनके एक बेटा था लेकिन कुसंगत में पढ़कर बिगड़ गया। तथा घर से जेवर चुरा कर भाग गया। उसके बाद उसकी कोई खबर नहीं मिली, जिंदा है या मर गया। पता नहीं। पति की मौत के बाद न जाने कौन सी दीमक चाची के दिमाग को चाटने लगी। उन्होंने घर से निकलना छोड़ दिया घर में चुपचाप पड़ी रहती।

एक दिन कुछ लोगों ने चाची को सूचना दी की पास के गांव में एक लड़की के साथ किसी ने गलत हरकत कर दी लेकिन कोई उसे पकड़ नहीं पाया। लड़की ने जहर खा लिया है और मरने वाली है। चाची तिलमिला उठी। पहुंच गई उसी गांव लड़की से कुछ बात की अकेले में किसी को कुछ नहीं मालूम। लेकिन चाची दो-चार दिन घर नहीं आई। लोगों को सड़क किनारे घायल अवस्था में पड़ी मिली और अस्पताल में भर्ती रही और ठीक हो गई। घर आने के बाद भी घर से बाहर ना निकली, वही उदासी। कभी बनाया, कभी न बनाया, खाया ना खाया। और एक दिन सोते-सोते रह गई।

पुलिस आई सामान देखा गया। तो उनकी वसीयत मिल गई। वसीयत में उन्होंने लिखा था यह मेरा घर अनाथ बच्चों के लिए आश्रम बनवा देना। मेरे शरीर पर जो जेवर हैं उन्हें एक लाल कपड़े में बांधकर घर के बाहर आले में रख देना जिसने मेरे ऊपर हमला किया वह आकर खुद ले जाएगा। मैंने उससे वादा किया था। मरने के बाद जेबर तुम्हें ही दूंगी। मगर एक शर्त है तो मैं यह गंदा धंधा छोड़ना पड़ेगा और उससे गंगा जली भी उठवा दी।

3 दिन पोटली रखी रही। कोई लेने नहीं आया। चौथे दिन पोटली वहां से हट गई। पोटली की रखवाली मोहल्ले वाले छिपकर कर करते थे। बाद में मोहल्ले में समाचार आया पोटली ले जाने वाले व्यक्ति ने थाने में आत्मसमर्पण कर दिया है तथा पोटली थाने में ही दे दी। भीड़ इकट्ठी थी देख ले कौन है। जानकारी मिली वह चाची का बेटा था।

''आदौ पूज्यो विनायकः''

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

'' आदिपूज्यं गणाध्यक्षमुमा पुत्रं विनायकम।
मंगलं परमं रूपं श्री गणेश नमाम्यहम!!''

गणेश शब्द का अर्थ है जो समस्त जीव, जाति गणों के ईश अथवा ईश्वर है-'' गणांनां जीव- जातानां य ईशः स गणेशः।'' शास्त्रों में-'' त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णु त्वं रूद्रः त्वं चन्द्र त्वं ब्रह्म भूभवः स्वरोम।'' गणेश सर्वदेवमय है। भारतीय परंपरा के अनुसार समस्त धार्मिक व मांगलिक कार्यों के आरम्भ में गणेश जी का स्मरण, स्तवन और पूजन आदि का विधान है। भगवान गणेश सत्व, रज व तम गुणों के ईश है उनका स्मरण करते ही अंतः करण में एक सुन्दर सी मूर्ति उभरती है, स्थूलकाय, तेजोदीप्त, वक्रतुण्ड महाप्राण देवता की जो ज्ञान व आनंद का स्वरूप है। गणेश जी अपनी चारों भुजाओं में चार आयुध पाश, अंकुश, वरदहस्त तथा अभयहस्त धारण करते हैं। पाश से भक्तों के पापों का नाश, वरदहस्त मुद्रा से भक्तों की कामना पूर्ति एवं अभयहस्त से उनके सम्पूर्ण जीवन की भय से रक्षा करते हैं। बड़े-बडे शूर्पाकार कान, यज्ञोपवीत व माथे पर चन्द्रमा धारण करनें वाले गणंनायक का ध्यान करने मात्र से ही ज्ञान, सौभाग्य व शांति प्राप्त हो जाती है। भगवान गणेश जल - तत्व के आधिपति है। जल के चार गुण होते हैं- शब्द, स्पर्श, रूप और रस। सृष्टि भी चार प्रकार की होती है- स्वदज, अण्डज, उदिज व जरायुज और पुरूषार्थ भी चार होतें है- धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष। गणेश जी का चतुर्भुज रूप हमें पुरूषार्थ के पथ पर कर्म करते हुए चलने की शिक्षा देता है।

'' ''सुमुखश्वैक दंतश्व कपिलो गजकर्णकः लम्बोदरश्ब विकटो विध्नाशो विनायकः।'' सिद्विविनायक देवता गणेश जी मेधां शक्ति और ज्ञान के स्वामी है। गणेश जी के अनेक नाम है जैसे विनायक, लंबोदर, एकदंत, गजानन, गजमुख, सिद्विदाता व विध्नेश्वर। प्रजापति की पुत्रियों रिद्वि व सिद्वि से इनका विवाह हुआ। आदि देवता गणेश जी की उपासना एवं महिमा के प्रमाण वेदों, पुराणों तथा अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध हैं, यथा- शुक्लयजुर्वेद-'' गणानां त्वा गणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे निधिंनां त्वा निधिपतिः हवामहे बसो मम।'' ऋग्वेदः- न ऋते त्वत क्रियते किं चनारे।'' पद्यपुराण, शिवपुराण आदि में गणपति महिमा का वर्णन है। त्रिदेवों सहित सभी देवी देवताओं, ऋषि मुनियों आदि ने गजानन का निम्न 32 अक्षरों के मन्त्र से पूजन किया- ''ऊँ श्रीं हीं क्लीं गणेश्राय बह्मरूपाय चारवे। सर्वसिद्वि प्रदेशाय विध्नेशाय नमो नमः।'' भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की चतुर्थी को गजानन के प्राकट्य के विषय में निम्न श्लोक प्रसिद्व है- '' सर्वदेवमयः साक्षात सर्वमंगलदायकः। भाद्रशुक्ल चतुर्थ्या तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।''

''आदौ पूज्यो विनायकः'' इस उक्ति के अनुसार गणेश जी की अग्र पूजा सर्वत्र सुप्रसिद्व और प्रचलित है। गणेशस्तोत्रम में भगवान विष्णु ने गणेश जी को श्रेष्ठ, वरणीय, वरदाता एवं वरदानियों का भी ईश्वर कहा है-'' वरं वरेण्यं वरदं वरदानामपीश्वरमं सिंद्व सिद्विस्वरूपं व सिद्विदं सिद्विसाधनम।'' गणेश जी की आराधना मात्र से विद्यार्थी को विद्या, धन की इच्छा वालों को धन, पुत्र की कामना वालों को पुत्र एवं मोक्ष चाहने वालों को परमगति प्राप्त होती है- '' विद्यार्थी लभते विद्यां, धनार्थी लभते धनम। पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम।।'' मंगल- मोद- निधान गणेश जी को कोटिशः नमन, मैं उनके उन चरण कमलों की शरण गहता हूँ जो संसार का आश्रय है और जिनकी रज के स्पर्शमात्र से विघ्नरूपी समुद्र तुरंत सूख जाते हैं'-

'' आलम्बे जगदालम्बे हेरम्बचरणाम्बुजे।
शुष्यन्ति यदरजः स्पशीत सद्यः प्रत्यूहवार्धयः।।''
!! ऊँ गं गणपतये नमः!!

वह मुस्कुराते क्यों हैं

- श्री गोपाल चतुर्वेदी, लखनऊ

विद्वानों का कहना है कि मुस्कुराना अच्छी सेहत के लिए जरूरी है। हम बहुत दिनों से यही कोशिश कर रहे हैं कि एक बार मुस्कुरा ना शुरू करें। और फिर मुसलसल मुस्कुराते ही रहे। पर हम जब भी मुस्कुराने का उपक्रम करते हैं, तो किराने के लाला का उधार, घर खर्च का जंजाल, दफ्तर के साहब का तत्काल याद आ जाते हैं। और हमारे होंठ किसी सार्वजनिक घोटाले की जांच से मिल जाते हैं। पिताजी ने बचपन से सिखाया था कि बेटा किसी से मिलो तो प्रफुल्लित दिखो। घर की दीवारों पर टंगे सारे देवी देवता मुस्कुराते हैं। जब हम स्कूल जाते तो मां कहती कि लड़का बाहर जाने से घबराता है। कैसा पीला पड़ गया है, इसका चेहरा। लौटते तो पूछती कि क्या पिटाई हुई है, जो चेहरे पर कब्रिस्तान ओढ़ रखा है।

बरहाल हम पित चेहरा लेकर पढ़ाई से नौकरी तक का मुश्किल सफर किसी तरह तय कर गए। जब नियुक्ति पत्र लेकर मुस्कुराते हुए पिताजी के पास पहुंचे, तो उन्होंने मां से जानना चाहा कि क्या लड़का नौकरी पाकर खुश नहीं है, जो ऐसी रोनी सूरत बनाए हुए हैं। मां ने उन्हें समझाया कि आनंद की चरम सीमा में अनजाने ही आंखों से आंसू छलक आते हैं। वह मेरी सूखी आंखों को रुमाल से पोंछती रही। जब तक मैंने मुस्कुराना बंद नहीं किया। मुस्कान के उड़न छू होने के बाद ही उन्हें यकीन हुआ कि लड़का दुखी नहीं है। इस घटना से सीख लेकर अपनी शादी के वक्त मैंने वह गलती नहीं की जो अमूमन हर दूल्हा सेहरा, संगीत और फूलों के माहौल में कर बैठता है। मैंने फरेबी मुस्कान को चेहरे के पास फटकने तक न दिया। तब से मेरी पत्नी और उसके परिवार वालों का ख्याल है कि जरूर मेरे शरीर में कहीं न कहीं किसी अरस्तु की रूह गिरफ्तार है।

जिस पीपल पर भूत का वास हो वह भला कैसे खुश रह सकता है। तन के पिंजरे में संजीदा रूह कैद होने के सुझाव सुनते सुनते मुझे शक हो चला कि वाकई कहीं ऐसा तो नहीं है। जो भी जब चिकित्सा विज्ञान एक कदम आगे बढ़ाता है, तो बीमारी दो। जैसे अपना वेतन और महंगाई हो। अभी तक जानलेवा मर्ज सिर्फ कैंसर था पर अब लाइलाज कई बीमारी धूम मचाए हुए हैं। कोई तन के रोग से बचे तो मन का पकड़ लेता है। कुछ दिनों तक हम इस कशमकश में उलझे रहे कि डॉक्टर को दिखाएं कि नहीं। पर हर बार अपनी आर्थिक स्थिति आड़े आ गई। विवश होकर हमने अपनी पत्नी की सलाह ली। जब से उन्होंने होम्योपैथी की दो तीन किताबें पढ़ी थी। तब से उन्हें खुशफहमी थी कि वह डॉक्टर हो गई है। हमारी समस्या सुनते ही यकायक उनके मन में व्यक्तिगत रूचि का ज्वार उमड़ आया। हमें संदेह हुआ कि होम्योपैथिक डॉक्टर और उसके मरीज के रिश्ते कहीं पति-पत्नी के संबंधों से अधिक घनिष्ठ तो नहीं होते हैं। हमारी जांच के दौरान पहले हमारी लिखित परीक्षा हुई। इसमें हमें अपने जीवन का कच्चा चिट्ठा दर्ज करना पड़ा। इसके पश्चात मौखिक इंतिहान की बारी आई। आपको मीठा पसंद है कि नमकीन। तुम्हें तो सब पता है। अब महंगाई में मिठाई नहीं मिलती, तो नमकीन खा खा कर गुजारा करना पड़ता है। गर्म चीज अच्छी लगती है या ठंडी। क्यों बेकार की बातें कर रही हो। अच्छे बुरे का सवाल ही कहां है। सुबह ठंडी डबल रोटी खाकर जाते हैं, दिन में सुखी चपाती चबाते हैं और शाम को दिन में बनी दाल रोटी। सर्दी गर्मी के मौसम में कौन सा बेहतर है। हम जीवन में संतुलन के हिमायती हैं। न कभी लू बहे, न पछुआ। मौसम में सम रहे। बिजली का खर्चा भी बचता है। पर अपने चाहने से होता क्या है। पानी भाता है कि चाय। सच पूछो तो अपनी रुचि न पानी में है, चाय में। मई-जून में खूब शीतल पेय मिल जाए तो क्या कहना। कभी कभार साहब खर्च सरकारी खर्चे पर हमें भी पिलवा देते हैं। इसी तरह जाड़ों में शानदार कॉपी का जवाब नहीं। पर यह तो बताओ कि इस खानपान की चर्चा का मेरे अंदर बसी पराई रूह से क्या वास्ता है। पत्नी कुछ खफा तो हुई, पर भारत की वीर नारियों की परंपरा की विरासत के नाते उन्होंने हार नहीं मानी। एक महीने तक हमारे जैसे नीरस विषय पर उनका गहन अध्ययन और शोध चलता रहा। मन के प्रेत की बात आई गई हो गई। मुझे लगने लगा कि मैं प्रश्नचिन्ह बनने की और तरक्की कर रहा हूँ। दफ्तर में बड़े बाबू सवाल करते, घर में घरेलू डॉक्टर। हमारे पड़ोस में एक नवविवाहित डॉक्टर जोड़ा रहता है। मैं उनकी दुर्दशा का काल्पनिक अनुमान लगाकर अपने को संतोष देने लगा। पर एक दिन उस कल्पना की कलई खुल गई। जब वर्मा जी से जानना चाहा कि बीमारी की दशा में वे एक दूसरे का इलाज करते हैं कि नहीं?

साइंस के साथ भावना जोड़े तो डायग्नोसिस गड़बड़ा जाती है और क्योर भी। इसीलिए हमारे यहां घरेलू डॉक्टर पालतू रोगियों का इलाज नहीं करते। उन्होंने सूचना दी। हम समझ गए अपनों की फालतू चीर फाड़ जानबूझकर कौन करना चाहेगा। होम्योपैथी में अपने परायो से क्या फर्क पड़ता है। गोली ही तो देनी है, वह भी मीठी। राम राम करते पत्नी का प्रायोगिक परीक्षण समाप्त हुआ। उन्होंने हमें दवा दारू के लायक नहीं समझा। उनका निष्कर्ष था कि हम भारत की किसी भी सामान्य आदमी के समान स्वस्थ हैं। पर अपना दिमाग में कीड़ा कुल बुलाता रहा। दुनिया जहान के लोग मुस्कुराते रहते हैं, फिर हम क्यों नहीं। दंत मंजन से लेकर बनियान अंडरवियर तक के विज्ञापन में महिलाएं मुस्कुराती हैं। विनाश की खबरें सुनाती है टीवी की उद्घोषिकाएँ मुस्कुराती हैं। भाषण देते मंत्री मुस्कुराते हैं और देश की सोचनीय हालत पर तकरीर करते विपक्षी नेता खिलखिलाते हैं। आखिर कोई तो राज होगा, जो हंसी खुशी के उत्सव में हमारे अलावा सभी मुस्कुराहट के चिराग जलाए चहल कदमी कर रहे हैं। हमने इस रहस्य से पर्दा उठाने का निश्चय किया।

अपने उधार वाले लाला से अक्सर हमारा साबका पड़ता है। एक दिन उन्हें अकेला पाकर हमने उनसे पूछ लिया। लाला जी, आप सारे दिन की मोलतोल और डंडी मारने की मजबूरी के बावजूद इतने प्रसन्न कैसे रहते हैं। वह मूँछो में मुस्कुरा कर बोले दूसरों की सेवा करने वाला सदा सुखी रहता है। सेवा में बड़ी शक्ति है। सेवा तो हम भी करते हैं ।हमने उन्हें टोका। आप काजजों की खिदमत करते हैं, ना, लाला ने प्रश्न किया। हमें स्वीकार करना पड़ा कि हम सचिवालय के पॉलिसी सेक्शन में काम करते हैं।

सेवा इंसानों की होती है। तब आपही के यहां के बिलबाबू शर्मा जी, शुगलन हमसे उधार लेते हैं, और दो-तीन दिन में हंसते हुए चुका भी देते हैं। एक आप हैं कि बार-बार उधार लेते हैं और साल में कभी कभार रो झीक्कर चुकाते हैं, उन्होंने उपदेश दिया। सेवा के बहु आयामी होने की बात अपने पल्ले पड़ी। खुशी उस सेवा से हासिल होती है, जिसमें मेवा मिले। लाला के पास ही मेहरा की आयातित माल की दुकान थी। हम उससे कतराते थे। आजकल गुप्तचर एजेंसियों का भरोसा नहीं है कि कब किसको धर ले। स्मगलिंग करें मेहरा और जेल जाएं

हम पर आज वहां जाना पड़ा। बड़े बाबू ने साहब की आयातित घड़ी ठीक कराने को दी थी। मेहरा जी ने घड़ी की मरम्मत जैसे छोटे काम करने में असमर्थता व्यक्त की। नई और लेटेस्ट मॉडल की घड़ी दिखाऊँ, इसमें टीवी भी है। उन्होंने हंसते हुए एक डिब्बे की ओर इशारा किया। हमने यह तकनीकी अजूबा देखा और मन मार कर रह गए। कोई बात नहीं, भाई साहब नहीं लेना है, तो मत लीजिए। ऐसे दुखी तो ना दिखिए। मेहरा जी ने हमारे साथ हमदर्दी जताई। आप कैसे इतने प्रसन्न रहते हैं मैंने जिज्ञासा व्यक्त की। सब आजादी का कमाल है, भाई साहब। अब माहौल ही खुशी का है। वरना गुलामी के दिनों में कोई धंधे की इस तरक्की का सोच सकता था, भला। अब आजाद देश में हमें झूठ है कि जो चाहे करें, उन्होंने उत्तर दिया। हमने दवी जवान जानना चाहा कि क्या पुलिस या कस्टम वाले उन्हें तंग नहीं करते। उन्हें भी कमाई की आजादी है। क्यों तंग करें। मेहरा जी ने हमारे घटिया विचार पर हमें झिड़का और चलता किया। हमारे मन में सेवा और आजादी के सिद्धांत नेता से जुड़े हुए थे। हमारे संसद सदस्य तो अधिकतर दिल्ली में रहते थे या विदेश।

स्थानीय विधायक जी को पकड़ पाना संभव था। फिलहाल वह चुनाव की आशंका से जनता के लिए उपलब्ध थे। एक दिन हम भी उनके भोर के दर्शन दरबार में पहुंच लिए। कहिए, वह हाथ जोड़े मुस्कुराते हुए अवतरित हुए।

मुझे आपसे कुछ सवाल पूछने हैं। मैंने आने का मकसद बताया। उनकी बांछें खिल उठी। अरे बिहारी, प्रेस वाले बाहर खड़े हैं। उन्हें अंदर ले चलो। चाय नाश्ता दो। मैं अभी जनता को निवटाकर आया। नेताजी ने मुंह खोलने का मौका न दिया और बिहारी ने मुझे ड्राइंग रूम में बैठा कर ही दम लिया। चाय, समोसे, चमचम अपने पेट में सिधार चुके थे। जब नेताजी अंदर पधारे। किस अखबार से हैं, आप आते ही उन्होंने प्रश्न किया। हमने उन्हें असलियत बताई कि हम किसी अखबार के खबर खोजू ना होकर महज खोजू हैं। उन्हें क्रोध आया। पर फिर मुस्कुराहट छा गई। चलिए हमारे धन्य भाग्य कि हम आपकी रिसर्च में काम आ सकेंगे। अब जल्दी पूछिए जो जानना है, हमें मीटिंग में जाना है। देश में सूखा पड़े, बाढ़ आये, महामारी फैले, भूकंप की प्रलय मचे, लोग भूख से मरे या मिलावट की दवा और दारू से। आपके चेहरे पर सदाबहार कैक्टस की मुस्कुराहट वैसी की वैसी फिट रहती है। चाहे आप टीवी पर नजर आएं या जनसभा में जाएं अथवा किसी मातम पुरषी में, इसका क्या राज है। हमने एक प्रश्न में पूरी जानकारी लेनी चाही।

यही तो फर्क है जनता और नेता में। नेता रास्ता दिखलाता है, प्रेरणा देता है। हमें आप की दुर्दशा पर मुस्कुराना पड़ता है। आपकी गरीबी पर हंसना पड़ता है। आपको क्या पता है कि इसके लिए हमें कितना प्रयास करना पड़ता है। सच मानिए, जब जनसंपर्क के दौरान हम कीचड़ की बदबू भरी बस्तियों में जाते हैं, तो हमें रोना आने लगता है कि कहां फंसे। पर क्या करें।

मजबूरी में मुस्कुराते हैं जिस पर आप हिम्मत न हारें। ठहाका लगाते हैं, जिससे आप निराश न हो, दिल छोटा न करें। शुरू में अटपटा लगता था, अब तो आदत सी पड़ गई है। बिना किसी प्रयास के मुंह की नसें मुस्कान की मुद्रा में अपने आप खींची रहती हैं। नेताजी के बयान ने मेरे ज्ञान चक्षु खोल दिए थे। हम इसलिए नहीं मुस्कुरा पाते क्योंकि आम आदमी को मुस्कुराना मना है। नेता और उनके जैसे अन्य खास लोग हैं, जिन्हें ना व्यापै जगत गति। मुस्कुरा सिर्फ वही सकते हैं।

जहाँ ई- तकनीक वहाँ हिंदी

- श्रीमती बीना मिश्रा, हैदराबाद

अपने अंदर भारतीय संस्कृति व सभ्यता को संजोए हिंदी एक ओर अपने प्राचीन आधारों से जुड़ी रही है तो वैचारिक, व्यवहारिक रूप से निरंतर परिवर्तन की स्वीकृति भी देती रही है। वर्तमान समय की आवश्यकता है। हिंदी आधारित स्टार्टअप्स बढ़े। जहां भी ई शब्द का प्रयोग होता है। वहां हिंदी की मजबूत उपस्थिति हो। हिंदी तकनीकी, ऊर्जावान दृष्टा एवं उद्यमी स्वयं को स्थापित कर मार्गदर्शक की भूमिका निभाएं। हिंदी के लिखित रूप में देवनागरी का प्रयोग बढ़े। सभी भारतीय भाषाएं संस्कृत की बेटियां हैं, तथापि हिंदी भाषा और लिपि दोनों में प्रबल उत्तराधिकारिणी है। संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत है। अतः जिस दिन अनिवार्य रूप से संस्कृत को जानना समझना पड़ेगा। देवनागरी लिपि ही सहायक होगी, क्योंकि संस्कृत का अधिकांश साहित्य देवनागरी लिपि में ही उपलब्ध है। आधुनिक युग में हिंदी की तकनीकी समृद्धि का प्रयोग अपने अपने संस्थान, व्यापार-व्यवसाय, राजकाज, पत्र लेखन में अधिकता से हो रहा है। फिर भी समष्टि रूप में देश, राष्ट्र उन्नति के लिए हिंदी भाषा का तकनीकी प्रयोग वृहद स्तर पर करने का समय आ गया है। देश में उत्पादकता बढ़ाने, शिक्षा का प्रचार प्रसार करने, बाजार को मजबूती देने, रोजगार उपलब्ध कराने, नवोन्मेष को बढ़ावा देने, रचनात्मकता सृजनशीलता बढ़ाने, सामग्री तैयार करने, सेवाएं शुरू करने, सेवाएं मुहैया कराने, समाज में तकनीकी शौक को संवर्द्धित करने आदि क्षेत्रों में किया जाना चाहिए। हिंदी में रचनात्मकता सर्जन धर्मिता बढ़े। जिससे इकोसिस्टम (आत्मनिर्भर परिस्थिति) पैदा हो। यह नारायण मूर्ति, सत्य नडेला और अजीम प्रेमजी जैसी सशक्त शख्सियतों तकनीकी दृष्टिओं को विश्व मानचित्र पर हिंदी को उन्नत स्थान दिलाने वाले उद्यमी पैदा करें। महत्वपूर्ण यह है कि अनुकूल वर्तमान परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए ग्लोबलाइजेशन के दौर में हिंदी को सुदृण स्थान दिलाने का सामरिक दृष्टि से भी प्रयास करें। इस समय हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग औपचारिक रूप से सरकारी कामकाज, मीडिया, व्यापार, मनोरंजक, सर्जनात्मक सामग्री के उपयोग पर है। चाहे वीडियो देखे जाने के लिहाज से, चाहे फेसबुक व्हाट्सएप जैसे सोशल नेटवर्किंग माध्यमों के प्रयोग, ऑनलाइन कार्यक्रम, चुनाव प्रचार, मीटिंग, प्रतिस्पर्धा का आयोजन, कोरोना काल की गंभीरता के कारण शिक्षण कार्य भी ऑनलाइन। लगभग सभी मंचों पर हिंदी अपनी सशक्त उपस्थिति

दर्ज करा रही है। बोलने वालों की संख्या के आधार पर विश्व की शीर्ष 20 भाषाओं में हिंदी (जिनमें छह भारत की हैं) का स्थान दूसरा है। भारतीय चिंता और चिंतन का विकास हिंदी में लगभग 1000 वर्ष पहले से स्वाभाविक रूप से होने लगा था। भारतवर्ष के आधे से अधिक हिस्से में सहस्त्र वर्ष व्यापी आशा आकांक्षाओं का साक्षात धरोहर के रूप में हिंदी साहित्य स्वतः एक एसी शक्तिशाली वस्तु है जो भारतीय सनातन, संस्कृति, सभ्यता, विचारधारा की संवाहिका है।

संस्कृत की वह धरोहर मनु और यागवल्क्य की स्मृतियों सूर्यादी पांचों सिद्धांत ग्रंथ, चरक और सुश्रुत की संहिताएं, पंच यज्ञ न्यायादि, छह आस्तिक दर्शन सूत्र, प्रसिध्द पुराण, रामायण महाभारत के वर्तमान रूप, नाट्यशास्त्र पारिणी का व्याकरण, पतंजलि का महाभाष्य इन ग्रंथों के निर्दिष्ट आदर्श व सन्निहित वैज्ञानिकता का प्रचार प्रसार को अपने चरम तक ले जाना। चाणक्य की अर्थ नीति, राजनीति आदि का व्यवहारिक अध्ययन व उसकी उपयोगिता आदि को प्रस्तुत करना। संवर्द्धित करना हम हिंदी वालों का उत्तर दायित्व बनता है। जो शेष है।

ध्यान देने योग्य यह है कि विभिन्न सम विषम परिस्थितियों में भी हिंदी भारतीय विभिन्न संस्कृतियों को सहस्त्र वर्ष व्यापी वैदिक युग से लेकर आज तक अतिशय रक्षणशील और पवित्राभिमानी रही है। विशेष नई शिक्षा नीति में बेसिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रहेगी। हिंदी के लिए यह अनुकूल परिस्थिति निर्मित हो रही है। आचार्य, प्राचार्या, शिक्षक छात्रों को शुद्ध हिंदी उसके व्याकरण सहित अच्छी तरह से पढ़ें व पढ़ाएं।

अपील

संशोधित, 17 अगस्त 2020

संघर्षरत सजातीय बान्धवों को सहयोग राशि महासभा द्वारा समाजहित की योजनाओं जैसे अन्नपूर्णा, महिला सहायता, छात्रवृत्ति आदि के माध्यम सहायता प्रदान की जाती है ।

अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्तमान सभापति डॉ. प्रदीप जी, द्वारा सम्पूर्ण समाज से अधिक से अधिक शीघ्र सहयोग की अपील की गई है। वर्तमान में 34 परिवार को सहायता भेजी जा रही है। प्रत्येक परिवार क़ो अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत सालाना सहायता 12000/- रुपये भेजे जाते है। सहायता त्रैमासिक आधार पर सीधे लाभार्थी के bank account में भेजी जाती है। आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग की अपेक्षा है।

डॉ. प्रदीप जी की अपील पर अभी तक समाज निम्न सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि में अपना अमूल्य योगदान किया है :-

1. कर्नल आलोक चतुर्वेदी (चंद्रपुर / ग्रेटर नॉएडा) 2000/-
2. श्री रतिंद्र नाथ पाण्डे अहमदाबाद 12000/-
3. श्री विनोद चतुर्वेदी (कछपुरा/ मुंबई) 12000/-
4. श्री मनोज चतुर्वेदी (कमतरी/ बैंगलोर) 12000/-
5. श्री राहुल चतुर्वेदी (होलीपुरा /मुम्बई) 12000/-
6. श्री सुधीर चतुर्वेदी (मैनपुरी/ नोएडा) 12000/-
7. श्री आशीष चतुर्वेदी, आगरा 1100/-
8. श्री अनिरुद्ध कुमार चतुर्वेदी, लखनऊ 6000/-
9. श्री विवेक चतुर्वेदी, मुंबई 12000/-
10. श्री संजय मिश्रा, कानपुर 1100/-
11. श्री अविनाश चतुर्वेदी, कानपुर 12000/-
12. श्री दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ 1100/-
13. श्री लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी, ग़ाज़ियाबाद 5100/-
14. श्री विनय चतुर्वेदी अहमदाबाद 12000/-
15. श्रीमती बीना मिश्रा, हैदराबाद 2001/-
16. श्रीमती भारती चतुर्वेदी, हावड़ा 1100/-
17. श्री हर्षमोहन चतुर्वेदी @मोहित, आगरा 5000/-
18. श्री नवीन चतुर्वेदी बंगलोर (फरौली) 12000
19. डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी, देहरादून 6000/-
20. आनंद सिंह परिवार होलीपुरा 12000/-
21. श्री दिलीप कुमार रमेश चंद्र चौबे, जलगांव 11000/-
22. श्री सिद्धांत सुनील मिश्रा, फरीदाबाद 2100/-
23. श्री भुवनेश चौबे, गोंदिया 6000/-
24. समाज गौरव कक्का श्री खरगराम जी (होलीपुरा /कलकत्ता) बाबा की स्मृति में श्री मदन जी (कलकत्ता), राजीव (दिल्ली), राहुल (मुम्बई) एवं मुकुल (दिल्ली) - 48,000/-
25. श्री पीयूष चतुर्वेदी (कमतरी/बैंगलोर) 12,000 /-
26. कु आकाँक्षा चतुर्वेदी (कंपिल /नोएडा) -1100/-
27. स्व. श्री गजेंद्रनाथ ₹शिब्बू₹ (हरदोई) की स्मृति में श्री अभिषेक चतुर्वेदी (बैंगलोर) द्वारा 12000/-
28. गुप्तदान , बैंगलौर /जयपुर 12000/-
29. पिता स्व.श्री राजेन्द्र नाथ जी चतुर्वेदी (मथुरा/ग्वालियर) की स्मृति में आलोक वशिष्ठ चतुर्वेदी,रायपुर द्वारा 5100/-
30. स्व. राजनाथ जी - स्व. सुषमा जी (पुरा/भोपाल) की स्मृति में सुशील चतुर्वेदी, बैंगलोर द्वारा -12000/-
31. श्री अरविंद जीं (कम्पिल/ ग़ाज़ियाबाद) 5000/-
32. श्रीमती शुभ्रा चतुर्वेदी, चेन्नई -1100/-
33. बाबा लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी ₹ठाकुर जी₹ की स्मृति में डॉ. मनोज चतुर्वेदी, ग्वालियर द्वारा 12000/-
34. स्व.श्रीमती गिन्दो देवी पत्नी स्व. बाबू लाल चतुर्वेदी की स्मृति श्री राम किशोर जी, जयपुर द्वारा -12000/-
35. बड़ी दादी श्रीमती गायत्री देवी (होलीपुरा), दादी श्रीमती तारा देवी (मुरादाबाद) की स्मृति में श्री तथागत चतुर्वेदी (मथुरा/दिल्ली) द्वारा 6000/-
36. श्री पियूष- श्री अम्बुज चतुर्वेदी (मैनपुरी/मुंबई) - 12000/-
37. स्व. अनारो देवी -स्व. राजबहादुर एवं भाई हेमन्त कुमार की स्मृति में गजेन्द्र नाथ (फरौली/ लखनऊ) - 5100/-
38. श्री स्वयंभू कुमार चतुर्वेदी 12,000/-
39. स्वर्गीय शैलेंद्र कुमार जी की स्मृति में श्री कुणाल चतुर्वेदी (कमतरी/जर्मनी) 10,000/-
40. पिता श्री प्रेमचंद चतुर्वेदी की स्मृति में शैलेंद्र जी (फरौली/फ़रीदाबाद) 6,000/-
41. श्रीमती शोभा जी- श्री कौशल कुमार चतुर्वेदी (कमतरी/सूरत) 15000/-
42. स्क़वा. लीडर अलंकार चतुर्वेदी (चंद्रपुर/दिल्ली) - 1100/-
43. अनूप कुमार चतुर्वेदी , कानपुर -1100/-

44. स्व. यतीश कुमार जी (लखनऊ) की स्मृति में श्री दिवस जी द्वारा – 5100/–
45. श्री केदार लाल चतुर्वेदी,जयपुर द्वारा –12000/–
46. पिता श्री सच्चिदानंद, माता श्रीमती गौरी देवी, एवं पत्नी श्रीमती ममता की स्मृती में प्रदीपकुमार चतुर्वेदी फरौली/फरीदाबाद 6100/–
47. क्षमा चतुर्वेदी की स्मृति में चतुर्भुज चतुर्वेदी चंद्रपुर / नोएडा 1100/–
48. श्री निखिल चतुर्वेदी नॉएडा/जापान 24000/–
49. श्री नितिन चतुर्वेदी, पुणे –5000/–
50. स्व. बाबू ओमकार नाथ चतुर्वेदी(होलीपुरा/कानपुर) व स्व. प्रभात चतुर्वेदी (इटावा) की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) द्वारा –24000/–
51. श्रीमती नीलम चतुर्वेदी पत्नी स्व. महेश चतुर्वेदी,जयपुर द्वारा –12000/–
52. कर्नल मोहित चतुर्वेदी मैनपुरी/बीकानेर) द्वारा –1100/–
53. श्रीमती अंजु एवं श्री राकेश चतुर्वेदी, बड़ोदरा द्वारा –12000
54. श्री राकेश चतुर्वेदी, पुणे द्वारा –1000/–
55. श्री शैलेश चतुर्वेदी, बैंगलोर द्वारा –12000/–
56. श्री समीर चतुर्वेदी, गुडगाँव –1100/–
57. श्री मधुकर मिश्रा, गुडगाँव –2100/–
58. श्री विवेक चतुर्वेदी सुपुत्र श्री गिरजाशंकर जी, नई दिल्ली –2100/
59. श्री राकेश चतुर्वेदी (जहाँगीरपुर/जयपुर) – 5000/
60. स्व. श्री दयानंद जी, स्व. श्रीमती सरोज जी व श्री प्रभात जी (पुरा कन्हैरा/भोपाल) की स्मृति में मनीष जी,अनिक जी, अंकित जी (पुरा/भोपाल) द्वारा। –12000/
61. डॉ. शिल्पी पांडे, नोयडा –5000/–
62. अपने पुत्र स्व. उमेश चतुर्वेदी की स्मृति में श्री शिव चतुर्वेदी (कोटा/ भवानी मंडी) द्वारा –6000/–
63. स्व.श्री उपेन्द्र नाथ चतुर्वेदी ,स्व. श्री सुनील चतुर्वेदी (सिकन्दरपुर/भोपाल) की स्मृति में डॉ. मीनू चतुर्वेदी,भोपाल द्वारा –12000/–
64. श्री प्रतीक पांडे सुपुत्र श्री कमलेश चंद्र पांडे,(पूर्व सभापति,महासभा) (मैनपुरी/नोएडा) –12000/–
65. स्व. पृथ्वीनाथ जी (पूर्व सभापति महासभा) की पुण्य स्मृति में श्री राकेश जी एवं श्री मनोज जी (कोलकाता) द्वारा –12000/–
66. गुप्तदान अहमदाबाद –5100/–
67. नृपेंद्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/नोयडा) –2100/–
68. श्री एम. एन. चौबे , जलगांव –5000/
69. पिता स्व. हरिकिशोर जी, माता स्व. किशोरी देवी, पत्नी स्व. रंजनाजी की स्मृति में डॉ. किशोरी रमन चतुर्वेदी (होलीपुरा/दिल्ली) –12000/–
70. श्री शैल चतुर्वेदी, लखनऊ –1500/–
71. श्री बलदाउजी के जन्मदिवस हल छठ पर श्रीमती मीना – श्री दिनेश चतुर्वेदी, लखनऊ द्वारा। – 5100/–
72. नवीन चंद्र चतुर्वेदी (जहाँगीरपुर/लखनऊ) द्वारा –2100/–
73. स्व. श्रीमती वीना चतुर्वेदी की स्मृति में श्री बी.के.चतुर्वेदी (मथुरा/जयपुर) द्वारा –12,000/–
74. श्री अभिषेक चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. कृष्णबल्लभ चतुर्वेदी (फर्रुखाबाद/दिल्ली) द्वारा –3100/–
75. डॉ. राजीव चतुर्वेदी, पुणे, –24000/–
76. श्री प्रभात चतुर्वेदी, लखनऊ –1100/–
77. पूज्यनिया माता श्रीमती अंगूरी देवी तथा पिता श्री कामता प्रसाद चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति में भुवनकुमार जी , गोपाल कृष्ण जी तथा गिरीश चंद्र जी (मैनपुरी/गुरुग्राम/नोयडा) द्वारा –50,000/–

Total - Rs. 6,77,001/-

विनम्रतापूर्वक आभार

सहयोग राशि भेजने के लिए :-

महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

सहायतार्थ राशि के हस्तांतरण की सूचना के साथ ई-मेल आई डी की जानकारी देने की भी कृपा करें।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
कार्यवाहक सलाहकार मंडल
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9871170559

शशांक चतुर्वेदी, सदस्य
कार्यवाहक सलाहकार मंडल
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9826086879

गया तीर्थ-पिण्डदान

- सुचित्रा "सिकंदरपुरिया" लखनऊ

गयायां न हि तत्स्थान यत्र तीर्थ न विद्यते।
सान्निध्यं सर्वतीर्थानां गया तीर्थ ततो वरम।।

अर्थात गया में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां तीर्थ न हो। समस्त तीर्थों में गया श्रेष्ठ तीर्थ है। मान्यता है अति पराक्रमी श्रेष्ठ असुर गयासुर ने यही कोलाहल पर्वत पर घोर तप किया। जिससे देवाताओं में घबराहट होने लगी। तब देवताओं ने ब्रह्मा जी से गयासुर से रक्षा करने की प्रार्थना की। तब ब्रह्मा जी ने प्रकट होकर गयासुर से वर मांगने को कहा-उसने कहा जो भी मेरा स्पर्श या दर्शन करें। वो स्वर्गलोक जाये। यह वर देने के बाद उससे दक्षिणा के रूप में उसका शरीर मांग लिया और फिर देवर्षियों ने वेद विहित यज्ञ गयासुर के मृत शरीर पर किया। लेकिन यज्ञ के उपरान्त भी गयासुर के शरीर में फिर हलचल होने लगी। तब ब्रह्मा, विष्णु, शिवजी से देवताओं ने गयासुर का प्रमाणिक अन्त करने की प्रार्थना की तब सभी देवतागण प्रकट होकर गयासुर से बोले-तुम तो अपने शरीर हमको दे चुके हो, इस पर गयासुर बोला- भगवान आप मुझ पर प्रसन्न होइये- मैं यर्थाथ में निज शरीर ब्रह्मा जी को सौंपता हूँ। भगवान बोले- हम प्रसन्न हुए, तुम अपनी अन्तिम इच्छा बताओं। गयासुर बोला- पांच कोस में फैला यह तीर्थ मेरे नाम से प्रसिद्ध हो, जब तक पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा रहे-तब तक गया क्षेत्र में स्नान, पिण्डदान, तर्पण और दान करने वालों के पितरों को मोक्ष मिले।

कांक्षन्ति पितरः पुत्रान नरकाद् भय भीरवः।
गयां यास्यति य पुत्रो स नस्त्राता भविष्यतिः।।

अर्थात ब्रह्मलोक में स्थित पितर सदैव इच्छा करते हैं कि मेरा पुत्र गया जावे और हमको मोक्ष मिल जावे।

प्रायः पितृ पक्ष में ही लोग अपने पितरों को पिण्ड दान करने गया तीर्थ जाते हैं। समय की उपलब्धता के अनुसार पन्द्रह, सात या तीन रात्रि गया में गुजारने से पाप नष्ट हो जाते है। गया तीर्थ यात्रा प्रारम्भ करने से पहले आपने बांधवों के साथ मूल स्थान (गांव) में एकत्र होकर पूजा-पाठ करते हैं, फिर गृहस्थान से देवस्थान तक दूध की धारा के साथ सामूहिक रूप से भजन गाते हुए पहुँचते है। वही से गया तीर्थ जाने वाले इलाहाबाद पहुँचकर संगम स्नान करने के बाद गया जाते है। पितृ-तर्पण एवं पिण्डदान प्रक्रिया का प्रारम्भ भाद्र माह शुक्ल पक्ष को अनन्त चतुर्दशी के दिन गया के पूर्व में पुनपुना नदी में स्नान करने के बाद मुण्डन करा कर पण्डित जी के निर्देशन में प्रक्रिया निभाते हुए मंत्रों के उच्चारण के साथ पितरों का आवाहन करते है।

गया शिर में पितृ पक्ष की सात पुश्त एवं मातृ पक्ष की सात पुश्तों के साथ ही स्वर्गीय चाचा-चाची, मामा-मामी, बुआ-फूफा तथा मौसी-मौसा आदि सभी का आवाहन कर कर्मानुसार पिण्डदान करते है। हम साथ में ही प्रेत-पिशाच, गन्धर्व, ग्रह-भूत, यक्ष-राक्षस व कुल देवता के लिए भी पिण्डदान करते है।

- भाद्र शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को गया में फल्गु नदी में स्नान करके खीर व भात का पिण्ड दान व श्राद्ध करते है।
- पितृ पक्ष आश्विन कृष्ण पक्ष पड़वा को ब्रह्मकुण्ड पर यवचूर्ण व जौ का पिण्डदान करने के बाद प्रेतशिला, रामशिला, राम कुण्ड, काकबलि पर पिण्ड दान करते है।
- दूज को पंच तीर्थ पर उत्तर मानस, उदीची, कनखल,

दक्षिण मानस जिहालोल में गदाधर जी को पंचरत्न दान व तर्पण करते है।

- तृतीया को सरस्वती स्नान कर पिण्डों को पंचामृत स्नान कराकर मातंगवापी एवं बोधगया में श्राद्ध का तर्पण करते है।
- चतुर्थी को ब्रह्म सरोवर पर तारक ब्रह्म का दर्शन कर आम्रसिंचन तर्पण करते है।
- पंचमी को रूद्रपद, विष्णुपद एवं ब्रहमपद पर जाकर पिण्डदान करते है।
- षष्ठी को कार्तिक पद, दक्षिणाग्नि पद, गाईपत्थाग्नि पद अध्वर्नायग्नि पद पर पिण्डदान करते है।
- सप्तमी को सूर्यपद, चन्द्रपद, गणेशपद, संध्याग्नि पद आवसंध्याग्निपद, दधीचि पद पर पिण्डदान करते है।
- अष्टमी को कंवपद, मातंगपद, कांच पद, अगस्त पद, इन्द्रपद, कश्यप पद अन्नदान तर्पण कर पिण्डदान करते है।
- नवमी को सीता कुण्ड पर राम गया, सौभाग्यवायदान श्राद्ध किया जाता है।
- दशमी पर गयाशिर पर गया कूप, मुण्ड पृष्ठा पर श्राद्ध किया जाता है।
- एकादशी को आदिगदाधर, धौतपद पर चॉदी दान के साथ पिण्डदान करते है।
- द्वादशी को भीम गया पर गौप्रचार एवं गदालोल श्राद्ध करते है।
- तेरस को वैतरणी करके गोदान व दूध से पिण्डदान करते है।
- चतुर्दशी पर मन्दिर पर विष्णु भगवान का पंचामृत स्नान कराके पिण्डदान करते है।
- अमावस्या को अक्षय वट पर श्राद्ध खीर का पिण्डदान करके सफल कर श्राद्ध पक्ष प्रक्रिया का देवताओं से मॉफी मांगकर पितरों से वापस जाने की प्रार्थना की जाती है।
- आश्विन शुक्ल पक्ष पडवा को गायत्री घाट पर स्नान कर दही चिवड़ा के दान के साथ पण्डित जी को दान दक्षिणा देकर उनसे प्रसाद (सुफल) लेते हैः वही परिवार के जीवित सदस्यों के नाम रजिस्टर में अंकित किये जाते है।

पिण्डदान प्रक्रिया के लिये पण्डित जी के निर्देशानुसार कुश का आसन, छोटे-छोटे बर्तन ग्लास, कटोरी, प्लेट, आरती के साथ ही फूल बत्ती, अगरबत्ती, जनेऊ, देशी घी, जौ का आटा, फल, मिष्ठान आदि की व्यवस्था करनी पड़ती है। पिण्डदान की प्रक्रिया सभी स्थानों परएक सी रहती है, कुछ विशेष स्थानों पर पिण्ड जौ की बजाय दुग्ध या अन्य पदार्थ से बनाये जाते है।

सामर्थ्य के अनुसार पारिवारिक श्राद्ध तिथियों पर ब्राहमण-भोजन कराने की भी प्रथा है। विभिन्न कुण्डों एवं अन्य स्थानों पर पिण्डों द्वारा पितरों का आवाहन किया जाता है और मोक्ष की कामना की जाती है। अनुष्ठान सम्पन्न करके सुफल करने के साथ ही सभी पितरों को गया तीर्थ में स्थान देकर विदा करते है।

गया से अनुष्ठान करने के बाद नियमित श्राद्ध कर्म न करने का प्रावधान है। गया से सामान्यतः लोग काशी में गंगा स्नान करके ही घर वापस आते है। वापस आने के बाद जहॉ दूध की धार देते है, वहीं गांव में ब्रह्म भोज कराने के बाद ही अनुष्ठान सम्पूर्ण होता है।

ऐसा विश्वास हैः-

''श्राद्धकृद् यो गया-क्षेत्रे पितृगामनृणो हितः''

अर्थात गया क्षेत्र में जो श्राद्ध करता है, वह पितृ ऋण से उऋण हो जाता है।

मेधावी विद्यार्थी

सुश्री मनस्वी सुपुत्री श्रीमती दीप्ति - श्री मनीष चतुर्वेदी (इटावा/लखनऊ) ने आई.सी.एस.सी बोर्ड के अंतर्गत कक्षा 12 वी की परीक्षा 96 प्रतिशत अंको के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

चि. प्राजित सुपुत्र श्री मुकेश चतुर्वेदी (होलीपुरा/आगरा) ने आई.एस. सी.ई बोर्ड के अंतर्गत कक्षा 10 की परीक्षा 90.3 अंकों के उत्तीर्ण की।

--

चि. मानस सुपुत्र श्रीमती दीप्ति - श्री मनीष चतुर्वेदी (इटावा/लखनऊ) ने आई.सी.एस.सी बोर्ड के अंतर्गत कक्षा 10 वी की परीक्षा 91 प्रतिशत अंको के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

श्राद्धपर्व एवं गया में पिण्डदान का औचित्य और महत्व

- कैप्टॅन व्यास चतुर्वेदी, आगरा

मेरे दादा एवं उनसे पूर्व की पीढ़ी आर्यसमाजी थे। विदित हो कि आर्यसमाजियों में मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा तथा श्राद्धकर्म आदि का विधान नहीं होता। मेरी परदादी सनातनी विचारों की थीं। मेरे पूज्य पिता पं0 प्रताप सिंह चतुर्वेदी पर अपनी दादी का तथा कुलपुरोहित आचार्य श्रीवर जी (सप्ताचार्य डॉ0 वासुदेव कृष्ण के पिताश्री) का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने आचार्य पं. श्रीवर जी से दीक्षा लेकर विधि-विधान से सनातनी पद्धति पूजा-अर्चना तथा प्रतिमाह पूर्णिमा पर सत्यनारायण की कथा, पंचामृत - पंजीरी आदि का प्रसाद तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, व शिवरात्रि पर व्रत-उपवास एवं मनकामेश्वर मन्दिर में दीपक चढ़ाना उनका नियमित विधान बन गया। कनागतों में पुरखों के श्राद्ध तर्पण आदि के द्वारा परिवार में सनातन संस्कारों को पूर्ण रूप से विकसित होते हुए मैंने देखा है। उक्त संदर्भ का उल्लेख इस लिये आवश्य है कि पीढ़ी दर पीढ़ी चली आई एक विचारधारा और संस्कार-पद्धिति से दूसरी विचारधारा तथा संस्कारों को अंगीकृत करना कम से कम मेरे जैसे व्यक्ति के लिए अत्यन्त दुरुह कार्य है। अस्तु गया में पिण्डदान के औचित्य और महत्व पर अपनी बात रखने के लिये मुझे आवश्यक लगा कि इस परिवर्तन प्रक्रिया का उल्लेख किया जाय।

वैदिक संस्कारों के अन्तर्गत होने वाले महायज्ञों में कर्मकाण्ड को विशेष महत्व है। प्रति वर्ष भाद्रपद की पूर्णिमा से आश्विन की अमावस्या तक का समय पितरों को समर्पित है। इस अवधि में पितृश्राद से मुक्त होने के लिये पुत्र को श्राद्धकर्म का पालन करना पुराणों में वर्णित है। पुराणों के अनुसार दिवंगत माता-पिता अथवा अन्य पूर्वजों की निर्वाण-तिथि अथवा पितृपक्ष में पड़ने वाली तिथि के अनुसार गया में पिण्डदान करने, ब्राह्मणों को भोजन कराने तथा तर्पण करने से पुत्र को पित्रऋण से मुक्ति मिलती है। धर्मशास्त्र के अनुसार गया की 54 वेदियों में विष्णु पद प्रथम है। इसके दर्शन मात्र से ही पितर नारायण रूप हो जाते हैं। गया की फल्गु नदी में स्नान और तर्पण करने से पितरों को देवयोनि मिल जाती है। सनातन हिन्दू समाज का यह दृढ़ विश्वास है कि गया में श्राद व पिण्डदान से उनकी पीढ़ियों के पितरों को मुक्ति मिल जाती है। वैदिक परम्परा के अनुसार इस पर्व का विशेष महत्व है। यों तो पर्व को समय या अवसर भी कहते हैं किन्तु यहाँ पर्व

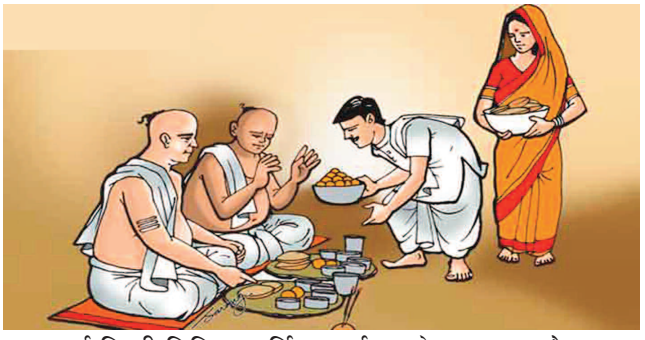

का अर्थ किसी विशिष्ठ धार्मिक कर्म करने का समय है। यथा ! कनागतों में पितरों का श्राद्ध तथा गया में विधि-विधान पूर्वक पिण्डदान। जैसी कि मेरी अल्प ज्ञातव्यता है कि पितरों की मुक्ति के निहितार्थ

पिण्डदान हेतु चार तीर्थ हैं- (1) पुष्कर स्थित ब्रह्माजी का मन्दिर, (2) कुरूक्षेत्र स्थित पिहावा क्षेत्र, (3) बद्रीनाथ स्थित ब्रह्मकुण्ड तथा (4) गयातीर्थ।

विषयांतर न हो जाय अस्तु मैं गया-तीर्थ के पितृविसर्जन स्थल पर ही प्रकाश डालने का प्रयास कर रहा हूँ। गया श्रेष्ठतम पितृतीर्थ माना जाता है। ब्रह्मपुराण में स्पश्ट उल्लेख है कि गया में ब्रह्माजी स्वयं निवास करते हैं। इसीलिए पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध, पिण्डदान, तर्पण आदि गया में सम्पन्न कराने का विशेष महत्व है। बिहार प्रदेश, भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण रहा है। शैक्षिक एवं धार्मिक दृष्टि से पूर्व में यह चरम पर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व प्राकृतिक सम्पदा से परिपूर्ण यह प्रदेश दो राज्यों में बट गया है। प्राकृतिक सम्पदा वाला भाग झारखण्ड प्रदेश व शेष बिहार प्रदेश का भाग है। गया इसी बिहार प्रदेश का एक प्रमुख नगर है। यह प्रदेश रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा है। इस प्रदेश में अभी भी प्राकृतिक सम्पदा कम नहीं है। रमणीक वनखण्डों, पहाड़ियों, जल-प्रपातों, ताल-तलैयों, गंगा एवं सोन जैसी महा नदियों का एक अच्छा जाल बुना हुआ है। एक समय में सोन नदी पर बना पुल व सोनपुर का रेलवे प्लेटफार्म विश्व के प्रमुख प्रतीकों मे गिना जाता था। एक लोक-कथा के अनुसार गयासुर नाम का एक पराक्रमी, बलशाली असुर था, उसने घोर तपस्या करके अपनी शक्ति एवं शौर्य के बल पर सम्पूर्ण जगत पर अत्याचार

करना शुरू कर दिया था। उसकी पाशविक वृत्ति से त्राहिमाम - त्राहिमाम करते हुए देवगण विष्णुजी की शरण में पहुँचे। भगवान विष्णु ने अपनी गदा से गयासुर का वध कर, जनमानस एवं देवताओं को मुक्ति दिला, गया-तीर्थ की मर्यादा स्थापित की। स्वयं ब्रह्माजी ने गयातीर्थ में यज्ञ किया तथा सरस्वती नदी की सृष्टि करके निवास करने लगे।

एक श्रुति के अनुसार गया में धर्मपृष्ठ, ब्रह्मसभा गयाशीर्ष तथा अक्षयवट के समीप पितरों की मुक्ति के निमित्त श्रद्धापूर्वक जो भी अर्पण किया जाता है। वह अक्षय होता है। पितृपक्ष में असंख्यों श्राद्धकर्ता मोक्ष की कामना से अपने पितरों को तर्पण, श्राद्धदान आदि से तृप्त कर स्वयं को सौभाग्यशाली एवं धन्य मानते हैं। योंतो गया तीर्थ में वर्ष पर्यंत श्राद्धकर्म किये जाते हैं, किन्तु पितृपक्ष में श्राद करने का विशेष महत्व है। नारदपुराण एवं अन्य श्राद्ध से सम्बन्धित धर्मग्रंथों में भी गया-तीर्थ में पितृ-विसर्जन का वृतान्त बडे.विस्तार में रोचक ढंग से बताया गया है। सूर्य की प्रथम किरण प्रदाता उदयगिरि (पर्वत) जहाँ सवित्रीदेवी के चरण चिन्ह दृष्टि गोचर होते हैं। वहीं योनिद्वार है। जहाँ जाने से मनुष्य अपने कुल की सात पीढ़ियों को पवित्र कर धन्य होता है। तदोपरान्त धर्म पृष्ठ स्थान पर जाना चाहिए। जहाँ स्वयं श्री धर्मराज विराजमान हैं। फल्गुतीर्थ, गयाशिर नामक पर्वत यथा गया के प्रमुख तीर्थस्थान, प्रेत शिला पर पिण्डदान कर मनुष्य प्रेतयोनि में पड़े अपने पितरों का उद्धार करता है। देवताओं के द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान राम ने महानदी में स्नान कर तर्पण किया था। तभी उक्त स्थान रामतीर्थ के नाम से विख्यात है। गया में पिण्डदान के लिए समय व महूर्त नहीं देखा जाता है क्योंकि गया सिद्धतीर्थ है।

पुराणों में ऐसा वर्णित है कि जो फल एक लाख अश्वमेघ यज्ञ में अनुष्ठान से प्राप्त होता है। वह फल फल्गु तीर्थ में श्राद्ध करने से प्राप्त हो जाता है। रामतीर्थ में स्नान कर भगवान शिव की वंदना कर, यमराज को बलि देकर तथा धर्मराज के दो स्वानों को भी बलि देकर गया में पिण्डदान की प्रक्रिया का विधान है। श्राद्धकर्त्ता को गया में पिता, पितामय, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही मतामह, प्रमातामह अर्थात माता-पिता, दादा-दादी, परदादा - परदादी तथा नाना-नानी, परनाना-परनानी इत्यादि के श्राद्ध के अतिरिक्त कुल गोत्र सगे सम्बन्धियों, इष्ट-मित्रों, स्वजनों की उत्तम गति के हितार्थ पिण्डदान, श्राद्ध करने का उल्लेख पुराणों में दृष्टव्य है। अतः यथाशक्ति सामर्थ व श्रद्धापूर्वक मनसा-वाचा-कर्मण से देवताओं, ऋषि-मुनियों का पूजन-अर्चन कर पितृमुक्ति हेतु शास्त्रानुसार श्राद्ध करना चाहिए।

त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा-विष्णु-महेश की स्तुति करके गया में विभिन्न स्थानों यथा वेदियों, नदियों, सरोवरों, वनखण्डों, पर्वत - श्रृंखलाओं पर निर्दिष्ट सामग्री जैसे- जल, अन्न, वस्त्र पिण्ड आदि के द्वारा विद्वानों, आचार्यों, पुरोहितों द्वारा विधि-विधान से श्राद्ध कराना चाहिए। ध्यान रहे कि इस अनुष्ठान का नारद पुराण में पंच दिवसीय गया श्राद्ध एवं पिण्डदान का उल्लेख है। इस दिशा-निर्देश के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मतीर्थ तत्पश्चात ब्रह्मकूप में श्राद्ध करने की परम्परा है। धर्मेश्वर धर्म को दण्डवत करके महाबोध वृक्ष को प्रणाम किया जाता है। स्नान-ध्यान, तर्पण, पिण्डदान, पूजन के पश्चात एकाग्र होकर किया गया श्राद्धकर्म पितरों को सुख-शांति दायक होता है। ब्रह्मसर में प्रकट हुआ आम्रवृक्ष ही सर्वव्यापी-घटघर वासी परमेश्वर विष्णु का ही स्वरूप है।

पुराणों में आश्चर्यजनक कई घटनाओं का उल्लेख है। गया तीर्थ में भीष्म पितामह ने विष्णुपद पर श्राद्ध करते समय अपने पितरों का आवाहन किया और जैसे ही पिण्डदान करने लगे तो उनके पिता महाराज शान्तनु के दोनों हाथ, पिण्डग्रहण को सामने निकल आये। इसी प्रकार भगवान श्रीराम ने रमणीय रूद्रपद में आकर जब पिण्डदान किया तो उनके पिता महाराज दशरथ ने हाथ फैला कर पिण्डग्रहण किया। यह विदित हो कि शास्त्र, हाथ में पिण्ड लेने की आज्ञा नहीं देता, इसलिये भीश्म पितामह ने विष्णु पद और भगवान श्रीराम ने रूद्र पद पर जाकर पुर्वजों की मुक्ति निमित्त पिण्डदान किया था। गयातीर्थ में प्रेत शिला के समान ही अक्षयवट के समीप पिण्डदान, तर्पण एवं श्राद्ध का विशेष महत्व बताया गया है। यह स्थान, गया में श्राद्धकर्म, सबसे अन्त में किये गये दानपिण्ड संकल्प एवं पितृ-विसर्जन और मुक्ति प्राप्त करने कराने के कर्मों से सम्बन्धित है। अक्षयवट के निकट श्राद्ध करके मनुष्य अपने पितरों को ब्रह्मलोक में पदार्पित करा देता है। अक्षयवट पर ब्राह्मणभोजन, वस्त्रदान तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं का दान करने पर स्वर्गस्थ पितर अपने वंशजों द्वारा किये गये श्राद्धकर्म से सदैव प्रसन्न रहते हैं।

अक्षयवट के अतिरिक्त वशिष्ठ तीर्थ, भस्मकूट, मुण्डपृष्ठ, कामधेनुपद, अगस्त्यपद सोमकुण्ड काकशिला, प्रेतकुण्ड आदि कई विशिष्ट स्थान (श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान, आदि के स्थान) है। जहाँ श्राद्ध करने मात्र से ही मनुष्य अपने पितरों को विभिन्न योनियों में भोग रहे दारुण-दुखों- कष्टों (दैहिक, दैविक भौतिकताप) से मुक्ति दिलाकर बैकुण्ठधाम पहुँचाता है। गया तीर्थ यात्रा कर श्राद्धकर्म करने से मनुष्य इस लोक में सुख वैभव, ऐश्वर्य, पुत्र-पौत्रादि सुख भोगकर अन्त में स्वयं भी मोक्ष प्राप्त करता है और उनमें ध्यान रखने की बात है कि पितरों की संतुष्टि तथा अपने कल्यार्थ किये गये श्राद्धकर्म में सबसे प्रमुख तत्व श्रद्धा, निष्ठा, आस्था एवं मनोयोग है। सही विधि-विधान भी परम आवश्यक संकल्प है ताकि पितर प्रसन्न होकर आपके दैहिक, दैविक, भौतिकतापों से संरक्षण कर आपकी सुख समृद्धि का आशीष प्रदान करें।

तर्पण

- श्री नारायण चतुर्वेदी, लखनऊ

जो लोग पितृपक्ष में तर्पण करना चाहते हैं, किन्तु उन्हें कर्मकांडी पंडित नहीं मिलते, वे इस तर्पण विधि से लाभ उठा सकते हैं। तर्पण खुली जगह, पूजाघर या खुले दालान में किया जा सकता है। उसे धुलाकर साफ कर लिया जाय और बैठने के लिए कुश का आसन बिछा लिया जाय, तथा यदि धूप न जलाया जा सके, तो दो-चार अगरबत्तियां जला दें। तर्पण करने से पहले दोनों हाथों की अनमिका में किसी पंडित से कुश की पवित्री (पैंती) बनवाकर पूरे समय तक पहिने रहें। एक बड़े लोटे में शुद्ध जल रख लिया जाय। यदि गंगाजल हो तो उसमें थोड़ा सा डाल लिया जाय। जो ब्राह्मण हैं वे नामों के आगे 'शर्मा' क्षत्रिय 'वर्मा' ओर वैश्य 'गुप्त' लगा लें। दैनिक संध्या करने के बाद तर्पण करना चाहिए। तर्पण का जल, किसी कटोरे या अन्य पात्र में डाला जाय और उसे तुलसी या अन्य किसी पौधे के जड़ों में छोड़ दिया जाय। भाद्र शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक (पितृपक्ष) में नित्य तर्पण करना चाहिए।

देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम

(1) तर्पणकाल – तर्पण का जल सूर्योदय से एक प्रहर तक अमृत, डेढ, प्रहर तक दुग्ध साढे तीन प्रहर तक जल रूप से पितरों को प्राप्त होता है।

(2) तर्पणकर्ता– पूर्वाभिमुख हो कुशा के आसन पर बैठकर तीन बार आचमन करने के बाद कुशा और जल लेकर संकल्प पढ़ें।

(3) तर्पणसंकल्प– ॐ अद्य ब्रह्मणोन्हि द्वितीयपरार्धे श्री वैवस्वतमन्वन्तरे श्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलि प्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा हं देवमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

(4) तर्पणतीर्थः – तर्पण के तीन तीर्थ हैं –
(1) देवतीर्थ – अंगुलियों का अग्रभाग। (2) कार्यतीर्थ – (प्रजापति) सबसे छोटी अंगुली का मूल । (3) पितृतीर्थ – तर्जनी और अंगुष्ठ का मध्यमभाग मूल ।

अथ देवादि तर्पणम – सव्य (बायें कन्धे पर जनेऊ रखकर) होकर देवतीर्थ से पूर्वमुख बैठकर त्रिकुशा और अक्षत से एक-एक अंजलि जल प्रत्येक नाम को पढ़कर देवें।

ॐ ब्रह्मा तृप्यन्ताम् (1) ॐ विष्णुस्तृप्यन्ताम् (2) ॐ रूद्रस्तृप्यन्ताम् (3) ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम् (4) ॐ देवास्तृप्यन्ताम् (5) ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् (6) ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् (7) ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् (8) ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् (9) ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् (10) ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् (11) ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम् (12) ॐ देव्यास्तृप्यन्ताम् (13) ॐ अप्सरस्तृप्यन्ताम् (14) ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् (15) ॐ नागास्तृप्यन्ताम् (16) ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् (17) ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् (18) ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् (19) ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् (20) ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् (21) ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम् (22) ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् (23) ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् (24) ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् (25) ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् (26) ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् (27) ॐ औषधयस्तृप्यन्ताम् (28) ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधुस्तृप्यन्ताम् (29)

अथ मरीच्यादि तर्पणम् – पुनः सव्य होकर पूर्वाभिमुख देवतीर्थ से अक्षतसहित एक-एक अंजलि जल नीचे के मरीच्यादि ऋषियों को देवताओं की तरह देवें–

ॐ मरीचिस्तृप्यन्ताम् (1) ॐ अत्रिस्तृप्यन्ताम् (2) ॐ अंगिरास्तृप्यन्ताम् (3) ॐ पुलत्स्यस्तृप्यन्ताम् (4) ॐ पुलहस्तृप्यन्ताम् (5) ॐ क्रतुस्तृप्यन्ताम् (6) ॐ प्रचेतास्तृप्यन्ताम् (7) ॐ वशिष्ठस्तृप्यन्ताम् (8) ॐ भृगुस्तृप्यन्ताम् (9) ॐ नारदस्तृप्यन्ताम (10)

अथ दिव्यमनुष्यतर्पणम् – 'निवीती' अर्थात माला के समान यथोपवीत और अंगौठे को करके कायतीर्थसे उत्तरमुख बैठकर त्रिकुशा और यव से दो-दो अंजलि जल प्रत्येक को देवें-

ॐ सनकस्तृप्यन्ताम् (1) ॐ सनन्दनस्तृप्यन्ताम् (2) ॐ सनातनस्तृप्यन्ताम् (3) ॐ कपिलस्तृप्यन्ताम् (4) ॐ आसुरिस्तृप्यन्ताम् (5) ॐ वोदुस्तृप्यन्ताम् (6) ॐ पंचशिखस्तृप्यन्ताम् (7)

अथ पितृतर्पणम् – अपसव्य (दक्षिण कन्धे पर यज्ञोपवीत को करके) होकर दक्षिणमुख हो त्रिकुशा लेकर तीन-तीन अंजलि जल तिलसहित वाम घुटना मोड़कर पितृतीर्थ द्वारा प्रत्येक को देवें – ॐ कवयवाडनलस्तृप्यंतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा (1) ॐ सोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा (2) ॐ यमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा (3) ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा (4) ॐ अग्निष्वात्ताः पिरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा (5) ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा (6)

अथ यमतर्पणम – पूर्वोक्त विधि से निम्न 14 यमों को भी तीन-तीन अंजलि जल देवें –

ॐ यमाय नमः (1) ॐ धर्मराजाय नमः (2) ॐ मृत्यवे नमः (3) ॐ अंतकाय नमः (4) ॐ वैवस्वताय नमः (5) ॐ कालाय नमः (6) ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (7) ॐ औदुम्बराय नमः (8)ॐ दध्नाय नमः (9) ॐ नीलाय नमः (10) ॐ परमेष्ठिने नमः (11) ॐ वृकोदराय नमः (12) ॐ चित्राय नमः (13) ॐ चित्रगुप्ताय नमः (14)

अथ पितृतर्पणम- तीन कुशों को एक में लपेटकर इकट्ठा कर लेने को मोटक कहते हैं और तीन कुशों को त्रिकुशा कहते हैं । इनके साथ तिल और कुश सहित तीन- तीन अंजलि जल पितरों को देवें –

ॐ वसुरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा
तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3।
ॐ रूद्ररूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा
तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3 ।
ॐ आदित्यरूपःअमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा
तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3
ॐ गायत्रीरूपाःअमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकीदेवी
तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3
ॐ सावित्रीरूपाःअमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकी देवी
तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः3
ॐ सरस्वतीरूपाःअमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकी देवी
तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3 ।
ॐ अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः: अमुकशर्मा
सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3 ।
ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा
सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3।
ॐ अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा
सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः 3 ।

इसी क्रम से पितृवय, तत्पत्नी , भ्राता, भगिनी (बहन), मातुल, मातुलानी, पितृष्वसृ (बुआ), पैतृष्व स्त्रीय (बुआ का पुत्र), मातृष्वसा (मौसी), मातृष्वस्त्रीय, मातुलेयादि तथा पिता-माता के सपिण्ड को एक-एक अंजलि दिया जावे। ससुर, सास, गुरू का भी तर्पण करें।

इसके अतिरिक्त और भी जो पितृ, देव, मानव आदि, जिनको जल देना अभीष्ट हो, नीचे लिखे मंत्र से जल देवें –

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।।
अतीतकुलकोटीना सप्तद्वीपनिवासिनाम।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम।।

नीचे के श्लोकों को पढ़ते समय बराबर जल देता जावे-

ये बान्धवाबान्धवाश्चये ज्न्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्मिखिला यान्तु यश्चासमत्तोभिवाञ्छित।।1।।

इस श्लोक को पढ़ते समय अंगोछे के खूंट से जल पृथ्वी पर निचोड़ कर तर्पण करें।

ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणों मृताः। ते गृहणन्तु मया दत्तै वस्त्रनिष्पीडनोदकम ।।2।।

श्री भीष्म पितामह को पूर्व की ओर मुख करके सव्यक होकर नीचे लिखे मंत्र से अथवा केवल जल लेकर तीन अंजलि देवें । ऐसे सौभाग्य बालब्रह्मचारी पितामह को ही प्राप्त है कि जिन्हें सभी हिन्दू -जनता अपना पितामह मानकर तर्पण करती है। यह हमारे देश का आदर्श है-

वैयाघ्रपदगोत्राय सांस्कृत्यप्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ।।

सूर्यार्घ – सव्य होकर पूवाभिमुख निम्नलिखित मंत्र से पुष्प, गंध, तुलसी आदि लेकर अर्ध्य देवें –

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय माँ भक्तया गृहाणर्ध्यं दिवाकर ।।

साभार- श्री भरत चतुर्वेदी, रिषड़ा
एवं डॉ. अरविन्द चतुर्वेदी, लखनऊ

हमारे पूज्य पिताजी श्री तुलसीरामजी की प्रथम पुण्यतिथि पर हमारी विनम्र श्रद्धांजलि

18/05/1925 - 27/06/2019

मेरे चाचाजी

चाचाजी यानि मेरे पिताजी का विचार आते ही मन फुदक के बचपन मे पहुंच जाता है। और सबसे पहले याद आता है मुझे अपना डायलॉग "चाचाजी कुछ चाहिए"। जब करीब आठ- नौ वर्ष की थी तब अक्सर जब कुछ करने को नहीं दिखता था, कुछ खेलने कूदने को नहीं होता था तो बोर होकर मैं ये डायलॉग बारबार बोलती थी। और तब मेरे चाचाजी मेरे लिए कभी लैया-गुड़ के लड्डू बनाते थे तो कभी मूँगफली की चिक्की। अब इस सबके लिए चाचीजी यानि मेरी अम्मा को कहाँ परेशान करते तो खुद ही बना देते थे। मैं तीनों भाई बहन (पीयूष भा०, प्रवीण भा०, और मैं) में सबसे छोटी थी तो शायद ज्यादा लाड़ मिल जाता होगा। प्रवीण भा० बताते हैं कि मैं शाम को अक्सर खेल के देर से घर लौटती थी तो उनको ही मुझे लाने के लिए भेजा जाता था। उनको लगता था कि चाचाजी से मुझे खूब डाँट पड़ेगी, पर चाचाजी ने कभी डाँटा नहीं बल्कि धीरे- धीरे समझाते थे। बचपन में मुझे वो धोंधा या धौंधकधल्लो कह कर बुलाते थे।बचपन में रात में खाना खिलाते- खिलाते रोज़ एक कहानी सुनाया करते थे। कभी महाभारत या रामायण का कोई प्रसंग या कभी पंचतंत्र की कहानी। ख़ज़ाना था उनके पास। इसी वजह से शायद मेरी हिंदी हमेशा बहुत अच्छी रही और इस का फायदा स्कूल में भी मिला। अम्मा चाचाजी को लालबुझक्कड़ कहतीं थीं, क्योंकि उनके पास हर परेशानी का हल होता था। मेरे लिए तो वो बैस्ट फ्रैंड थे। दिनभर में जो स्कूल, कॉलेज, दोस्तों के साथ हुआ सब सुनाती थी। वो धैर्य से सुनते थे। मेरी हर परेशानी का हल बताते थे। मूड बूस्टर थे मेरे। आपको अजीब लगेगा, पर पता है मैं अपने पिताजी से कुछ सालों तक ऐसे बात करती थी जैसे वो मेरे हमउम्र हों। उनका नाम भी रखा था 'छोटू'। उन्होंने मुझे कभी इस सबके लिए डाँटा या टोका नहीं। मंद –मंद मुस्कराते हुए सब सुनते थे। शायद पीयूष और प्रवीण भा० दोंनों हॉस्टल चले गए थे और मैं अकेली पड़ गई थी इसीलिए। धीमे स्वर में सब समझाते थे। मुझसे भी कहते थे कि बात इतने धीमे स्वर में करो कि, जिससे बात कर रहे हो उसी को सुनाई दे। ईमानदारी और कर्त्तव्यपरायणता का पाठ भी उनको देखते हुए ही मिला। अपने अधीनस्थ काम करने वालों के संग उनका व्यवहार सौहार्दपूर्ण था और वो केवल अपने ही नहीं बल्कि सबके उत्थान के विषय में ध्यान रखते थे। इसलिए सभी कर्मचारी उनका बहुत सम्मान करते थे। मुझे तो याद है कि एक दफ्तर का चपरासी जो बहुत ढीठ था और किसी की नहीं सुनता था वो भी चाचाजी की हर बात माना करता था। चाचाजी की ही प्रेरणा से मैंने मेडिकल की पढ़ाई करने की ठानी और सफल रही। वो तब भी हर कदम पर साथ थे। अपने परिवारजनों से उनको बहुत प्रेम था। हम लोगों को वो कौड़ियान मोहल्ला, भरतपुर के किस्से, बड़े कक्का (उनके पिताजी), छोटे कक्का (उनके चाचाजी), बड़े भा० (हुकुमचंद ताऊजी मेरे), छोटेभा०(अमरसिंह ताऊजी), जयशंकर भा०,डॉ०सा०(चक्खनलाल ताऊजी) के किस्से, अपनी अम्मा(दादी), बड़ी भौजाई, छोटी भौजाई, मलकिन,बहुरानी (सभी मेरी ताईजी) के किस्से सुनाते थे। हमारी बुआजी 'जानकी देवी जी' तो कई वर्ष हमारे साथ लखनऊ में रहीं थीं। दोनों भाई-बहन जो मनोहारी अंदाज़ में एक- दूसरे की टांग खिंचाई करते थे वो मुझे अभी भी याद है। उनके और अम्मा के समय में हमारे घर में परिवार के सदस्यों का आना –जाना काफी होता था। सबकी प्रेमपूर्वक आवभगत होती थी। बहादुरभा०, राकेश भा०, डॉ. ताऊजी, हेमंत मामाजी, माधोसिंह, आशा जीजी काफी आते थे।रौनक लग जाती थी। अपने किस्से भी सुनाते थे कि कैसे दिल्ली में 'धरती के लाल' न्यूज़ पेपर में काम करते हुए उन्होंने अपना पोस्टग्रेजुएशन किया था। दिन में काम और नाइट कॉलेज में पढ़ाई। खुद ही खाना बनाते थे। हमने तो उनको पी. आई .बी .के इनफार्मेशन ऑफिसर और फिर फील्ड पब्लिसिटी के रीजनल ऑफिसर के पद पर कार्यरत देखा। पत्रकारिता जगत में भी उनका काफी सम्मान था। जब रिटायर हुए तो राजस्थान के प्रमुख पत्र राजस्थान पत्रिका ने उनको सम्पादन के कार्य के लिए भी बुलाया। आकाशवाणी से भी उनको बुलाया गया टॉक देते रहने के लिए परंतु उनकी रुचि थी आर. एस. एस. की शाखा का कार्य करने की। किसी बड़े पद की लालसा नहीं थी। वो बस एक कर्मठ कार्यकर्ता की तरह आर. एस .एस. का काम करते रहे। उसमें उनका मन रमता था। अम्मा की तबीयत ज्यादा खराब हुई तो वो पीयूष भा० के पास दिल्ली आ गए और फिर उसके बाद जयपुर वापिस नहीं आ पाए।अम्मा उनका साथ 2008 में छोड़ गईं। वो फिर पीयूष भा० के पास ही रहे आए। लेकिन उनका मन जयपुर जाने का करता रहता था। उम्र के आठवें- नवें दशक में भी अपने सारे काम खुद करते थे। किसी पर आश्रित होना उनको पसंद नहीं था। उनकी याद्दाश्त अंत तक अच्छी थी। उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी थी। परिवार के सदस्यों के जन्मदिन और विवाह वर्षगांठ की लिस्ट बनवाई थी और याद से न केवल फोन करके सबको आशीर्वाद देते थे बल्कि वॉट्स –ऐप पर भी ऑडियो मैसेज देते थे। रोज नियम से सुबह की राम –राम का मैसेज भेजते थे और अगर किसी दिन कुछ खास है तो उसकी महत्ता भी बताते थे। मन से कवि थे। युवावस्था में काफी काव्य लेखन किया था।उसी में से एक कविता मुझे आज भी याद है "पथ ने पहचाना वह राही, जिसके पैरों की गति न थकी, सौ मोड़ राह ने लिए लक्ष्य से मंज़िल ओझल हो न सकी"। मुझे लगता है कि उनकी ये कविता उन पर ही चरितार्थ होती है। अविराम चलते रहने वाले अविस्मरणीय पथिक 27 जून,2019 को 94 वर्ष की उम्र में, बिना कोई शारीरिक कष्ट पाए हम सबको छोड़ इहलोक की यात्रा को चले गए। हमारे पूरे परिवार की उनको विनम्र श्रद्धांजलि। शत शत नमन।

डॉ. मधु चतुर्वेदी	पीयूष चतुर्वेदी	प्रवीण चतुर्वेदी
मुंबई, ठाणे।	दिल्ली	जयपुर

हमारे पिता – हमारे जीवनदर्शक
(आदरणीय पिताजी स्वर्गीय श्री तुलसी राम चतुर्वेदी – चन्द्रपुर की प्रथम पुण्य तिथि - आषाढ़ कृष्ण पक्ष दशमी, 2077, दिनांक : 15.06.2020)

हमलोग अपने पिताजी को 'चाचाजी' कहकर सम्बोधित करते थे, ये शायद संयुक्त परिवार की देन है. चाचाजी का विगत वर्ष 27 जून को दिल्ली में आकस्मिक निधन हो गया था, इसका जरा सा भी पूर्वानुमान हम सबको नहीं हुआ, नहीं तो अवश्य ही हमलोग जयपुर से उनके अंतिम मुलाकात के लिए अवश्य पहुँच जाते. उसके 1 दिन पूर्व ही तो whatsapp ग्रुप पर परिवारजनों को, जो नियमित रूप से प्रातः शुभकामनायें देते थे, वो दी थीं। परिवार को इस दुखदः समाचार का रंच मात्र भी अंदेशा नहीं था। चाचाजी हमारे वृहत परिवार के स्तम्भ की तरह थे, उनके जाने से पूरा परिवार शोकाकुल हो गया।

चाचाजी की जीवन-शैली बहुत नियमित थी, प्रातःकालीन भ्रमण, बागवानी एवं अपने दिनभर के सारे कार्य व्यवस्थित रूप से कार्यान्वित करते थे. चाचाजी आरएसएस के भी कर्मठ कार्यकर्ता थे। सुबह समय से पहुँच शाखा की गतिविधियाँ प्रारंभ कर देते थे. 80-82 वर्ष की आयु तक साईकिल पर ही अपने कार्य करते रहे. इन सबके परिणाम स्वरुप उनका शरीर स्वस्थ रहा और कभी अस्पताल का मुँह नहीं देखना पड़ा. चाचाजी का शिक्षा के प्रति विशेष झुकाव था. हमारी माताजी ने विवाहोपरांत, तीन बच्चों के साथ, B.A., M.A. की पढ़ाई की. हमारी बुआजी जो काफ़ी समय लखनऊ में हमलोग के साथ रहीं, ने भी अपना हाई स्कूल चाचाजी के प्रोत्साहन से ही किया. हम दोनों भाईओं ने इंजीनियरिंग BITS, पिलानी एवं बहिन ने एसएमएस, जयपुर से मेडिकल किया, ये सब उनका शिक्षा को प्राथमिकता देने के कारण ही संभव हो पाया. कभी आर्थिक दिक्कत भी आयीं हों तो हमलोगों को कभी महसूस नहीं होने दी. जब बच्चों की सफलता पर उन्हें खबर दी, तो उनका कहना था कि 'अगर बच्चों के नाम से परिवार का नाम हो रहा है तो समझो परिवार उन्नति कर रहा है'. चाचाजी का किस्से सुनाने का अंदाज़ बेहद निराला था, जब सब परिवार के जन बैठे हों तो उनके किस्से बड़े ही मन से सुने जाते थे.. शायद पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण, अपने किस्सों को इस ढंग से बताते थे जैसे सामने ही घटित हो रहे हों, जैसे – (i) होटल कलार्क आमेर में लिफ्ट का अपना पहला अनुभव, प्रेस कांफ्रेंस में 7वें फ्लोर पर जाने के लिए नीचे-ऊपर होते रहे पर सही जगह पर नहीं उतर पाए. (ii) बहुत दिन इस असमंजस में रहे कि अच्छे-खासे जूते अपने-आप टाईट कैसे हो गए, पर पहनते रहे, काफ़ी अरसे बाद पता चला कि मोज़े उन जूतों के अन्दर ही पड़े रह गए थे,

इसी प्रकार के अपने अनेक अनुभव हास्य का पुट देकर इतने रोचक अंदाज़ में बताते थे कि सबको बड़ा आनंद आता था.

चाचाजी में पुरातन एवं नवीन संस्कृति का अनूठा समन्वय था. मेरी पत्नी सुषमा का शादी के तुरंत बाद जयपुर आने पर चाचाजी के प्रति एक ख़ास अनुभव रहा, जब चाचाजी ने उनसे कहा कि यहाँ परिवार के सब सदस्य एक साथ मिलकर खाते-पीते हैं और गप-शप करते हैं, पर्दा प्रथा के ऊपर उनका कहना था कि पर्दा तो आँखों की होनी चाहिए. आधुनिक तकनीकों को भी उन्होंने अपनाया था, मोबाईल के ज़रिये सबके साथ बराबर संपर्क में रहना, परिवार के सभी Whatsapp ग्रुपों में ऑडियो के माध्यम से नित्य प्रातःकालीन शुभकामनायें देते थे एवं परिवार के हर छोटे-बड़े सदस्य की वर्षगाँठ एवं विवाह वर्षगाँठ पर शुभकामनायें एवं आशीर्वचन अवश्य देते थे, फिर व्यक्तिगत रूप से कॉल करके भी बधाई देते थे, ये उनके दैनिक नियमों में था, जो क्रम आखरी दिन तक भी चलता रहा।

चाचाजी की खेल के प्रति भी विशेष रुचि थी, परिवार के लोग जब इकठ्ठा होते थे, तब ताश का बड़ा ज़ोर रहता था. बचपन में हमलोग के पास इंडोर–आउटडोर खेल का सब सामान उपलब्ध रहता था, चाहे वो शतरंज, कैरम या क्रिकेट क्यों ना हो. इस वजह से कॉलोनी में हमलोगों की बड़ी धाक रहती थी. चाचाजी को टीवी पर भी सभी खेल देखने का बहुत शौक था, चाहे फिर वो क्रिकेट हो या टेनिस, बाकि नियमितरूप से देखने वाले कार्यक्रमों के साथ खेलों का भी भरपूर आनंद लेते थे। चाचाजी को साहित्यिक रुचि थी एवं भारतीय संस्कृति से विशेष प्रेम था. हमलोगों को बचपन में पौराणिक कथाएँ एवं देशप्रेम की घटनायें खूब सुनाते थे. सभी त्योहारों, वे चाहे हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई हों, सभी को बड़े उत्साह से मनाते एवं सब की पृष्ठभूमि भी बताते थे। बड़े एवं छोटे कक्का (हमारे बाबा) के उदहारण देकर हमलोगों को दैनिक जीवन के नियमों का ज्ञान कराते थे. चाचाजी की लेखन में भी गहरी रुचि थी, उनकी कुछ कवितायँ जैसे 'जो दो डग चलकर ठहर गया ------', 'अमर बलिदान बनकर जी,अमर विश्वास बनकर जी ------' अत्यंत प्रेरणादायक हैं और सबके द्वारा बहुत पसंद की जाती हैं।

चाचाजी की अनुशासनपूर्ण व्यवस्थित जीवन शैली एवं सबके प्रति प्रेम और सेवा भाव उनके महान व्यक्तित्व को दर्शाता है. वे हमसब के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेंगे।

उनको शत्-शत् नमन

- प्रवीण चतुर्वेदी
मो. – 8005499706

मोह सकलव्याधि करमूला

- ईश्वर चंद्र चतुर्वेदी, हिंडौन

ईश्वरः सर्व भूतानां हृदेशे अर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्व भूतानि यन्त्रारुढानि मायया।।

श्री कृष्ण कहते हैं कि है अर्जुन सभी प्राणियों के हृदय में ईश्वर रहता है। वह अपनी माया से शरीर रूपी यंत्र से सभी का संचालन करता है। शरीर रूपी यंत्र जैसा होगा। ईश्वर की माया द्वारा उसे वैसा ही कार्य करवाया जाएगा। यह शरीर रूपी यंत्र मानव, पशु, पक्षी, देव दानव आदि में जैसा भी हो, वैसा ही व्यवहार उसके द्वारा किया जाता है। इन सब में मानव शरीर ही कर्म प्रधान है, क्योंकि अन्य सभी तो भोग योनियां ही हैं। जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।
चेतन अमल सहज सुख राशि।।

यह जीब परमात्मा का अंश है। चैतन्य है, विकार रहित है तथा आत्माराम है। किंतु जब संसार में यह माया के बंधन में पड़ जाता है, तब इसमें विकार उत्पन्न हो जाते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर, यह छः विकार इस जीव को बांध लेते हैं। इनमें से प्रथम तीन काम, क्रोध तथा लोभ को त्यागने के लिए तो भगवान ने भी कहा है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमाव्मनः।
कामः,क्रोध तथा लोभः तस्मात एतत व्रयं त्यजेत।।

काम क्रोध और लोभ यह तीन प्रकार के नरक के द्वार हैं। इनसे ही जीवात्मा का पतन होता है। अतः यह तीनों त्याज्य है। विभीषण ने राक्षस राज रावण को भी इन विकारों को त्यागने की सलाह दी।

काम, क्रोध, मद, लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुवीरहिं भजहु, भजहिं जेहिं संत।।

इन विकारों के संदर्भ में एक प्रश्न यह होता है कि इनका मूल क्या है। अपने शिष्य भारद्वाज के साथ तमसा नदी के तट से लौटकर बाल्मीकि ने इस श्लोक पर विचार किया और इस और अनौचित्य श्राप के कारण शोक में डूब गए। किंतु आगे चलकर यही श्लोक श्रीराम कथा का आधार हुआ। जहां तक साधारण मानव की बात है तो वह तो मोह रूपी रात्रि में ही सो रहा है। जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है–

मोह निशा सब सोवनिहारा।
देखिय सपन अनेक प्रकारा।।

मोह रूपी रात्रि में यह संसार सोया हुआ है, अर्थात वह कर्तव्य विमुख होकर विश्वरूपी विषयों का ही चिंतन करता है। विषयों को पुरुषार्थ मानकर उनकी प्राप्ति के उपाय ही उसके स्वप्न है। मानव जीवन जी की मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ अवसर है। यदि विषयों का चिंतन किया जाए तो अगला जन्म भोगयोनि में अवश्यभावी है।

जानिय जबहि जीव जग जागा।
जब सब विषय विलास विरागा।।

जीव का जागना तो तब हो कहा जा सकता है। जब उसे विषयों से वैराग्य हो जाए। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि भोग सर्वथा वर्जित है। भोग भी ₹तेन व्यकतेन भुज्जीथा।₹ के अनुसार हो अर्थात त्याग पूर्वक भोग हो।

इंद्रियाणि इन्द्रीयार्थेषु इति मत्वा न सज्जते

मानव में शब्द आदि पांच विकार है जबकि एक ही विकार से जीव का पतन हो जाता है।

इस विषय में श्री रामचरितमानस में लिखा है
काम, क्रोध, लोभादि मद प्रवल मोह कै धारि

कामादिक विकार मोह की प्रबल सेना है। इस प्रकार मोह राजा है और विकार उसके आज्ञाकारी अनुचर है।

वास्तव में मोह ही वह मूल है। जिससे व्याधि रूपी वृक्ष की उत्पत्ति होती है। मोह ज्ञानी को भी होता है, लेकिन उसका प्रभाव उसकी जिज्ञासा को बढ़ाता है। जैसे कि गरुणजी का मोह–

सो अवतार सुनेउँ जग माही।
देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं।।

गुरुङ जी का मोह श्रीराम के चरित्र के विषय में था। जब उन्होंने काकभुसंडी जी से राम कथा सुनी। तब उनका मोह दूर हुआ। स्वयं गरुण जी ने कहा है –

जौ नहि होत मोह अति मोहे।
मिलते उँतात कुबन विधि तो ही।।

गरुण जी का मोह परमार्थिक है। इसी प्रकार माता भवानी का भी मोह हुआ था। उनके मोह निवारण हेतु ही शिव जी ने संसार को पवित्र करने वाली राम कथा की रचना की। ब्रह्मा जी को भी भगवान के मानुष चरित्र से मोह हुआ। भगवान श्री राम के अवतार का कारण नारद जी का मोह, तो लोक प्रसिद्ध है। यह सभी ईशत्व प्राप्त थे। अतः इनके मोह से जग हित निश्चित ही होना था। आदि कवि वाल्मीकि भी मोह ग्रस्त हुए थे और परपीड़ा से मर्माहत होकर ही उनका मोह क्रोध में परिणत होकर श्लोक

रूप में प्रकट हुआ।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाशवतीः समाः।
यत क्रौञ्च मिथुनादेकमवधोः काम मोहितम।।
अलि, पतंग, गज, मीन, मृग एक एक गुण हीन।
नर में यह पांचों लखै, तो क्यों ना होय दुख दीन।।

अलि (भ्रमर) रस लोभी होता है। लोभ के कारण वह कमल पर बैठा रहता है और सूर्यास्त के साथ कमल कोष बंद होने पर वह उसी में कैद हो जाता है। पतंग में रूप के प्रति राग होता है, तो वह दीपशिखा पर गिरकर प्राणांत कर लेता है। गज में स्पर्श सुख की चाह होती है। इसी कारण वह आसानी से पकड़ लिया जाता है। मीन भी गंध के विकार से सहज ही पकड़ में आ जाती है। भीलनी जब राग छेड़ती है तो मृग उससे मोहित हो जाता है। भील को फंदा लेकर आता हुआ देखकर संगीत से मोहित हुआ हिरण खड़ा रह जाता है और बंधन में पड़ जाता है। जब एक ही विषय जीव का पतन कर देता है। तो फिर मानव मैं तो पांच विषय हैं। फिर वह कैसे बचेगा? उत्तर सहज है- जीत मोह महिपाल दल मोह रूपी राजा के इस दल (कामादिक) को जीतकर ही सहज अवस्था प्राप्त की जा सकती है।

संकल्प विधि

- मुनीन्द्र नाथ चतुर्वेदी, नोयडा

हमारे धर्म शास्त्रों के अनुसार किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए की गयी कोई भी पूजा या अनुष्ठान के शुरू करने से पहले संकल्प लिया जाता है | संकल्प लेने के लिए सामने गणेश जी स्थापना कर हाथ में थोडा गंगाजल और अक्षत लेकर इस प्रकार बोले :

" हे परमपिता परमेश्वर, मैं (अपना नाम और अपना गोत्र बोले) न आपकी पूजा -पाठ जानता हूं , न मंत्र जानता हूं , न यन्त्र जानता हूं, न वेद -पाठ पढ़ना जानता हूं , न स्वाध्याय जानता हूं , न सत्संग जानता हूं , न क्रियाएं जानता हूं , न मुद्राएँ जानता हूं , न आसन जानता हूं , मैं तो आप द्वारा दी गई बुद्धि से यथा समय, यथा शक्ति यह (यहाँ 'यह' के स्थान पर पूजा का नाम बोले) पूजा पाठ कर रहा हूं | हे परमपिता परमेश्वर/हे मेरी जगजननि माँ, इसमें कोई गलती हो तो क्षमा करें , और मुझ पर और मेरे परिवार पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखे | मेरे और मेरे परिवार में सभी अरिष्ट , जरा , पीड़ा , बाधा , रोग, दोष , भूत बाधा , प्रेत बाधा , जिन्न बाधा , पिशाच बाधा , डाकिनी बाधा , शाकिनी बाधा , नवग्रह बाधा , नक्षत्र बाधा , अग्नि बाधा , अग्नि बेताल बाधा , जल बाधा , या किसी भी प्रकार की कोई भी अन्य बाधाएं हो तो उनका निवारण करें । मेरे और मेरे परिवार के इस जन्म में और पहले के जन्म में यदि कोई पाप हुए हो तो उनका समूल निवारण कर दे । मेरे और मेरे परिवार के जन्म कुंडली में यदि किसी प्रकार की दुष्ट ग्रह की नजर पड़ रही हो तो उन्हें शांत कर दे । मेरे और मेरे परिवार की जन्म कुंडली में कोई गोचर दशा , अंतर दशा , विन्शोत्री दशा , अमांगलिक दशा और कालसर्प दशा , किसी भी प्रकार की कोई अवांछित दशा हो तो उनको समाप्त कर दे । मेरे और मेरे परिवार में आयु , आरोग्य , एश्वर्य , धन सम्पत्ति की वृद्धि करें और मेरे और मेरे परिवार पर , हमारे पशुओं पर और वाहन पर अपनी शुभ दृष्टि बनाये रखे इसके लिए मैं इस पूजा का (भगवान श्री गणेश जी के साथ -साथ सभी देवी – देवताओं की पूजा का) संकल्प लेता/लेती हूं |

संकल्प का अर्थ है किसी अच्छी बात को करने का दृढ निश्चय करना। सनातन धर्म में किसी भी पूजा-पाठ, अनुष्ठान या जाप करने से पहले संकल्प करना अति आवश्यक होता है, और बिना संकल्प के शास्त्रों में पूजा अधूरी मानी गयी है। मान्यता है कि संकल्प के बिना की गई पूजा का सारा फल इन्द्र देव को मिल जाता है।

इसलिए पहले संकल्प लेना चाहिए, फिर पूजन करना चाहिए। संकल्प लेने का अर्थ यह है कि हम इष्टदेव और स्वयं को साक्षी मानकर संकल्प लें कि यह पूजन कर्म विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति (अथवा सामान्य रूप) के लिए कर रहे हैं और इस संकल्प को पूरा जरूर करेंगे। संकल्प लेते समय हाथ में जल लिया जाता है। श्रीगणेश को सामने रखकर संकल्प लिया जाता है ताकि श्रीगणेश की कृपा से पूजन कर्म बिना किसी बाधा के पूरा हो जाए। इस परंपरा से हमारी संकल्प शक्ति मजबूत होती है। व्यक्ति को विपरित परिस्थितियों का सामना करने का साहस प्राप्त होता है।

राम जन्मभूमि पूजन

- विभा अतुल (लखनऊ)

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , शबरी माता के बेरों की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, केवट मल्लाह की टेरो की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , सरयू की पावन लहरों की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, हर ग्राम और हर शहरों की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है , फटे हुए तिरपाल की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, श्री राम चन्द्र कृपाल की .....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , शत्रुधन जैसे भाई की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, कैकेयी सुमित्रा माई की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , सिंहासन रखे खडाऊँ की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , स्वर्गवासी गिद्ध जटायू की....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, ऋषि वशिष्ठ पाराशर की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है , विश्वामित्र गुरुवर की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, जनकनंदिनी सीता की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, रामचन्द्र परिणीता की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, वीर बली बजरंगी की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, वानर दल साथी संगी की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, सेवक सुमंत्र सारथी की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , जामवंत महारथी की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, सदियों के वनवास की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है, भक्तों के विश्वास की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज है , रामचरित रामायण की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , जन मानस धर्म परायण की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, लक्ष्मण की वधु उर्मिला की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज , पावन मात अहिल्या की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, भ्राता भरत मिलाप की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, माँ कैकेयी के संताप की....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, बेटे लव कुश के बाणों की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, दशरथ के त्यागे प्राणों की.....

हुई प्रतीक्षा पूर्ण राम, कौशल्या के पयपान की
हुई प्रतीक्षा पूर्ण आज, सारे ही हिन्दुस्तान की.....
जय बोलो सियाराम की.....

जीवन

- भरत चतुर्वेदी, अचल (होलीपुरा/रिषड़ा)

वेदना से भरा हुआ,
मनुज का यह जीवन।
नित उलझती गूथियाँ,
सुलझाते बीतता जीवन।
फीकी मुस्कान लिए चलता,
मनुज का यह जीवन।

अश्रुधार से सिंचित,
समस्याओं से विस्मित।
आशा का अवलंबन,
मनुज का यह जीवन।

व्यथा सागर में डूबा हुआ,
गहन तिमिर में खोया हुआ।
खोजता प्रकाश किरण,
मनुष्य का यह जीवन।

स्वयं से डरा हुआ,
कांटों से गिरा हुआ।
जड़ है या है चेतन,
मनुज का यह जीवन।

दुनिया ने नश्तर चुभोये,
खड़ा हैं लेकर कर में दिए।
तन मन में हैं तपन,
मनुज का ये जीवन।

हिंदी का थोडा.आनंद लीजिये/मुस्कुरायें

- दिनेश चतुर्वेदी, लखनऊ

हिंदी के मुहावरे, बड़े ही बावरे है,
खाने पीने की चीजों से भरे है...

कहीं पर फल है तो कहीं आटा-दालें है,
कहीं पर मिठाई है, कहीं पर मसाले है ,

चलो, फलों से ही शुरू कर लेते है,
एक एक कर सबके मजे लेते है...

आम के आम और गुठलियों के भी दाम मिलते हैं,
कभी अंगूर खट्टे हैं,
कभी खरबूजे, खरबूजे को देख कर रंग बदलते हैं,

कहीं दाल में काला है,
तो कहीं किसी की दाल ही नहीं गलती है,

कोई डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाता है,
तो कोई लोहे के चने चबाता है,

कोई घर बैठा रोटियां तोड़ता है,
कोई दाल भात में मूसरचंद बन जाता है,

मुफलिसी में जब आटा गीला होता है,
तो आटे दाल का भाव मालूम पड़ जाता है,

सफलता के लिए कई पापड़ बेलने पड़ते है,

आटे में नमक तो चल जाता है,
पर गेंहू के साथ, घुन भी पिस जाता है,

अपना हाल तो बेहाल है,
ये मुंह और मसूर की दाल है,

गुड़ खाते हैं और गुलगुले से परहेज करते हैं,
और कभी गुड़ का गोबर कर बैठते हैं,

कभी तिल का ताड़, कभी राई का पहाड़ बनता है,
कभी ऊँट के मुंह में जीरा है,
कभी कोई जले पर नमक छिड़कता है,

किसी के दांत दूध के हैं,
तो कई दूध के धुले हैं,

कोई जामुन के रंग सी चमड़ी पा के रोई है,
तो किसी की चमड़ी जैसे मैदे की लोई है,

किसी को छटी का दूध याद आ जाता है,
दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक पीता है,
और दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है,

शादी बूरे के लड्डू हैं, जिसने खाए वो भी पछताए,
और जिसने नहीं खाए, वो भी पछताते हैं,

पर शादी की बात सुन, मन में लड्डू फूटते है,
और शादी के बाद, दोनों हाथों में लड्डू आते हैं,

कोई जलेबी की तरह सीधा है, कोई टेढ़ी खीर है,
किसी के मुंह में घी शक्कर है, सबकी अपनी अपनी तकदीर है...

कभी कोई चाय-पानी करवाता है,
कोई मख्खन लगाता है
और जब छप्पर फाड़ कर कुछ मिलता है,
तो सभी के मुंह में पानी आ जाता है,

भाई साहब अब कुछ भी हो,
घी तो खिचड़ी में ही जाता है, जितने मुंह है, उतनी बातें हैं,
सब अपनी-अपनी बीन बजाते है, पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है,
सभी बहरे है, बावरें है
ये सब हिंदी के मुहावरें हैं...

ये गज़ब मुहावरे नहीं बुजुर्गों के अनुभवों की खान हैं...
सच पूछो तो हिन्दी भाषा की जान हैं।

शाखा समाचार

फिरोजाबाद

सावन मास की तृतीया 23 जुलाई 2020 हरियाली तीज पर्व को मुहल्ला चौबान स्थित श्री माथुर चतुर्वेदी समाज की युवतियां, लड़कियों ने अर्जुन सिंह चतुर्वेदी व शैलेन्द्र चतुर्वेदी के मार्गदर्शन में उत्साह पूर्वक मनाया। सामुहिक रूप से हरियाली गीत पुरूवाई ऐसी ऋतु आई सावन में भी खेले रंग आई झूला झूलन बगिया में गीत पर मनमोहक सावन गीत पर थिरक उठी।

श्री माथुर चतुर्वेदी की बेटियों ने तीज से पहले अपने अपने हाथों पर मेंहदीं उकेरी, हाथों में हरी हरी चूड़ियाँ पहनी तथा घेवर मिठाई का लुत्फ उठाया। सावन का महत्व बताते हुए सौम्या चतुर्वेदी ने कहा कि कोरोना वायरस के चलते हमारे इस तीज पर्व को भी बांध कर रख दिया है। वैसे भी अब सब त्यौहार तो मात्र औपचारिकता ही है। रही सही कसर करोना संक्रमण ने पूरी कर दी। लेकिन हम सब का यह कर्तव्य बनता है कि हम भी सोशल डिसटेंगिंस का ध्यान रखें खुशी खुशी सभी त्यौहार मनाए। इस तीज पर्व पर श्रेया चतुर्वेदी, सौम्या चतुर्वेदी, रिसा चतुर्वेदी,शान्तनु चतुर्वेदी आदि उपस्थित थी।

कानपुर

दिनांक 15 अगस्त 2020 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कानपुर द्वारा चतुर्वेदी धर्मशाला साकेत नगर कानपुर में अध्यक्ष श्री विजय शंकर के द्वारा झंडा फहराया गया इस अवसर पर श्री माथुर चतुर्वेदी सभा के महामंत्री प्रवेश जी के साथ साथ सत्येंद्र जी,अनूपजी, प्रणव जी, संजय मिश्रा जी,प्रशांत जी,धर्मेंद्र जी, भूपेंद्र जी, प्रीति जी सहित करीब 16 लोग उपस्थित थे। मिष्ठान वितरण के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कानपुर

दिनाँक 2 अगस्त 2020 को महासभा के सभापति श्री प्रदीप चतुर्वेदी जी एवं सलाहकार मण्डल के सदस्य श्री मुनींद्र नाथ जी,श्री ज्ञानेंद्र जी,श्री शशांक जी के साथ श्री माथुर चतुर्वेदी सभा,कानपुर की मीटिंग जिओ मीट डिजिटल मंच पर सम्पन्न हुई। सभापति जी के साथ कई पर विचार विमर्श हुए। इस मीटिंग में कानपुर सभा के अध्यक्ष श्री विजय शंकर जी, मंत्री श्री प्रवेश भाई साहब के साथ अनूप जी,आशुतोष जी,संजय जी, अतुल जी,विश्वास जी,अनुराग जी शामिल हुए।सभापति जी ने कानपुर सभा के कार्यो को सराहा एवं जनगणना के कार्य मे सहयोग की अपील की एवं कानपुर सभा ने सहयोग का आश्वासन दिया।कोरोना वायरस के बढ़ते हुए प्रकोप के बावजूद सभापति जी द्वारा जीओ मीट पर मीटिंग करवा कर एक नई मिसाल प्रस्तुत की।कोरोना काल में कानपुर सभा द्वारा किए जन सेवा के कार्यों की सभापति जी ने भूरी भूरी प्रशंसा की।

समाज समाचार

डॉ.अरविंद चतुर्वेदी, आई.पी.एस सुपुत्र स्व. श्री शैलनाथ चतुर्वेदी (इटावा/ लखनऊ/ बाराबंकी) अधीक्षक पुलिस, बाराबंकी को पुलिस की उत्कृष्ट शौर्य सेवा के लिए राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित किया गया। हार्दिक बधाई।

श्री नवीन चन्द्र चतुर्वेदी (जहांगीरपुर/लखनऊ) ने अपने नाती चि. सहस्र सुपुत्र श्री नितिन के जन्मदिन के अवसर पर रुपए 2100/- अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ प्रदान किये। (र.क्र.297)

मयूख चतुर्वेदी पुत्र क्रिटी चतुर्वेदी (लखनऊ) ने सीबीएसई बोर्ड की 10 वी की परीक्षा में 93 प्रतिशत नम्बरों के साथ पास की। इस उपलक्ष्य में पत्रिका सहायतार्थ 500/- रुपये दिलीप चतुर्वेदी (हरिद्वार) ने प्रदान किये है। बधाई।

चि. अश्विनी चतुर्वेदी सुपुत्र श्री अंशुमान चतुर्वेदी - श्रीमती सविता चतुर्वेदी (जयपुर) ने सी. बी. एस. सी. बोर्ड के अंतर्गत कक्षा 12वीं की परीक्षा 87.2 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

ग्राम तरसोखर में 2019 की बाढ़ से क्षतिग्रस्त हुए मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य पूर्ण हुआ। इस कार्य को पूरा करने में सभी ग्राम वासियों व प्रवासी ग्राम वासियों का बहुत सहयोग रहा। मंदिर को आधुनिक तरीके से साज सज्जा के साथ बनाया गया है। सभी देव स्थानों को नया रूप दिया गया है। इस पुनीत कार्य में सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। कोरोना काल में इतनी राशि एकत्र होना भी एक आश्चर्य की बात है। इस कार्य मे 1,90,000/- की राशि एकत्र एवं खर्च हुई। देवी देवताओं की कृपा से एकत्र संपूर्ण राशि आवश्यक निर्माण कार्य में उपयोग हो गई। जीर्णोद्धार कमेटी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

शोक समाचार

* श्रीमती अभिलाषा चतुर्वेदी पत्नी श्री अजय चतुर्वेदी (लखनऊ/ जबलपुर/ शाहबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 4 जुलाई 2020 को जबलपुर में हो गया।
* श्रीमती कमला चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी (शाहबाद/नोयडा) का स्वर्गवास दिनाँक 5 जनवरी 2020 को नोएडा में हो गया।
* श्री अशोक चतुर्वेदी सुपुत्र स्व.परमेश्वरी दास चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता) का स्वर्गवास दिनाँक 07.08.2020 को कलकत्ता में हो गया।
* श्री बद्रीलाल चतुर्वेदी (चित्तौड़गढ़/कानपुर) का स्वर्गवास 88 वर्ष की आयु में अपने पुत्र सुनील चतुर्वेदी के पास 8 अगस्त 2020 को कानपुर में हो गया।
* श्रीमती गिरजा मिश्रा पत्नी स्व.श्री भोलानाथ मिश्रा (जयपुर/काशी भवन,प्रयाग) का स्वर्गवास 7 जुलाई 2020 जुलाई को अपनी पुत्री के पास नोएडा में हो गया है।
* श्रीमती विनोदनी चतुर्वेदी पत्नी स्व.श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी (चन्द्रपुर/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 10.08.2020 को अपने पुत्र अनुराग के पास कानपुर में हो गया।
* श्रीमति विनोदिनी देवी चतुर्वेदी पत्नी स्व. केदारनाथ चतुर्वेदी (मिर्जापुर/वाराणसी) का स्वर्गवास दिनाँक 12.08.2020 वाराणसी में हो गया है।
* श्री श्याम कुमार चतुर्वेदी (इटावा/ग्वालियर) का स्वर्गवास उनके पुत्र के पास खरगोन (म.प्र.) में हो गया।
* श्रीमती आशा देवी पत्नी स्व. सुशील चंद्र मिश्र (तिलाकियाँ) (मिश्राना/मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 14.08.2020 को मैनपुरी में हो गया ।
* श्री अनूप चतुर्वेदी पुत्र स्व.त्रिवेणीशरण चतुर्वेदी (मैनपुरी /कानपुर/आनंद) का स्वर्गवास दिनाँक 14.08.2020 को अहमदाबाद में हो गया।
* श्री प्रदीप चतुर्वेदी,केशव (मैंनपुरी/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 14/08/2020 को अहमदाबाद को अपने बेटे के पास हो गया।
* श्रीमती सुमन चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री विजय कुमार जी चतुर्वेदी (करौली/जयपुर) का स्वर्गवास दिनांक 15/08/2020 को जयपुर में हो गया।
* श्री राजेश नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी/ इंदौर) का स्वर्गवास दिनाँक 17.08.2020 को इंदौर में हो गया। आप इंदौर चतुर्वेदी समाज के वरिष्ठ समाजसेवी थे। आपने महासभा में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। ॐ शाँति
* श्री अजय चतुर्वेदी पुत्र स्व.धनेश चन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 17.08.2020 को गुडगाँव में हो गया।
* श्रीमती शारदा देवी पत्नी स्व. देवेन्द्र नाथ जी (चन्दवार) का स्वर्गवास आज दिनाँक 18 अगस्त 2020 को 92 वर्ष की आयु में नोयडा में अपने भतीजे विष्णुकांत जी के पास हो गया।
* श्री उमेश चंद्र चतुर्वेदी पुत्र श्री विमल चंद चतुर्वेदी (फरौली/ बरेली) का स्वर्गवास दिनांक 22 जुलाई 2020 को बरेली में हो गया।
* श्रीमती सरिता चतुर्वेदी पत्नी स्व.भूपेंद्रनाथ चतुर्वेदी (इटावा) का स्वर्गवास दिनाँक 11.8.2020 को कल्याण,मुम्बई हो गया।
* शीला मिश्रा पत्नी स्व सतीश चन्द्र मिश्रा (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 17 जुलाई 2020 को मैनपुरी में हो गया।
* श्री उमेशचन्द्र सुपुत्र श्री विमल चन्द्र जी (फरौली/बरेली) का स्वर्गवास दिनाँक 22 जुलाई 2020 को लगभग 62 वर्ष में बरेली में हो गया है l
* श्री रामअवतार चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. नन्दलाल जी (बसुआ गोविन्दपुर /कोलकाता) का स्वर्गवास दिनाँक 24 जुलाई 2020 को लगभग 77 वर्ष की आयु में कोलकाता में हो गया।
* कु० सानिया सुपुत्री श्री अजीत चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद /कानपुर) का आसामयिक स्वर्गवास 13 वर्ष की अल्पआयु दिनाँक 4 अगस्त 2020 को कानपुर में हो गया है।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।